मासिक—

मानव मन्दिर

संरक्षक :

परम दयाल पं० फकीरचन्द जी महाराज

सम्पादक :

सेठ दुर्गादास जी

वर्ष ३	सतम्बर १९७६	संख्या ५

जीवन यात्रा

लेखिक :—दुर्गादास साहिब चण्डीगढ़

राधास्वामी। कहावत है कि किसीने प्रभु से पूछा। जब आप हम पर खुश हो जाते हो तो क्या करते हो ? प्रभु ने उत्तर दिया। मैं वर्षा कर देता हूं। उसने फिर पूछा, नहीं, नहीं, जब बहुत प्रसन्न हो जाते हो फिर क्या करते हो ? उत्तर मिला वर्षा कर देता हूं। तीसरी बार फिर यही उत्तर मिला।

फिर उस भक्त ने पूछा। जब आप नाराज़ हो जाते हो तो क्या करते हो ? उत्तर मिला, सफर दे देता हूं। पूछा यदि ज्यादा नाराज़ हो जाओ तो उत्तर मिला पैदल सफर देता हूं। तीसरी बार पूछने पर उत्तर मिला कि जब बहुत अधिक नाराज़ हो जाता हूं तो पैदल सफर के साथ कुछ बोझा भी सिर पर रख देता हूं।

पता चला कि सबसे दुखदाई वस्तु इस संसार में सफर है। सबसे बड़ा सफर इस जीवन का है। तो इस जीवन की यात्रा सबसे दुखदाई हुई। है भी यह सच। यदि सचमुच आपको यह जीवन यात्रा का कष्ट है तो इस कष्ट को दूर करलो।

कई सज्जन इस कष्ट से इतने दुखी हैं कि वे आवागवन की युक्तियें सोचते रहते हैं। वे यह समझते हैं कि यह जीवन यात्रा कभी समाप्त नहीं होगी। मृत्यु के बाद फिर जन्म होगा। जीवन यात्रा जारी रहेगी। यह जन्म मरण कैसे समाप्त होगा ? यह भेद किसी समर्थ सत्गुरु से मिल सकता है। इनकी शरन में जाओ। इनका सत्संग करो। बात समझ में आ जायेगी फिर अमल का प्रश्न रह जायेगा।

बहुत आदमी ऐसे हैं जो यात्रा में बड़े खुश और सुखी रहते है। सफर इनके लिए एक Attraction है। पश्चमी और दक्षणी पोल की सैर, बर्फ से ढके हुये पहाड़ों की सैर, समुद्र की सैर, संसार की सैर और रेगिस्तान की सैर। जीवन यात्रा की वे परवाह तक नहीं करते हैं बल्कि इस यात्रा में और कई प्रकार के

सफर शामिल कर लेते हैं और सारी आयु सफर ही करते रहते है। इनसे मिलिए ये बड़े उत्साही होते हैं। इनकी बातों से सुनने वाले का खून जोश में आ जाता है। ऐसा ज्ञात होता है कि वह जीवन का आनन्द ले रहे हैं। जीवन का यदि कोई उद्देश है तो यही कि संसार की सैर करो और ज्ञान में वृद्धी करो।

यदि आप निर्मोही नहीं बन सकते हैं और आवागवन से छुटकारा भी नहीं चाहते तो फिर आपको इस जीवन की यात्रा को बहुत अच्छा बना लेना चाहिए ताकि यह यात्रा आसानी से, सुख से, शान्ति से और खुशी से कट जावे।

इस जीवन की यात्रा को सुख और शान्ति से व्यतीत करने के लिए आपको क्या करना चाहिए।

१. किसीसे शत्रुता नहीं होनी चाहिए। आपका कोई शत्रु न हो। आपको बुरा कोई न कह सके।
२. प्रेम पूर्वक जीवन व्यतीत हो। जिस किसी से मिलाप हो जाये या सम्वन्ध हो जाये। इसको आप पूर्ण प्रेम के रूप दिखाई दें।

३. बेकार कभी नहीं रहना चाहिए। जब तक जीना तबतक सीना। इस सिद्धान्त पर अटके रहो।

४. लक्ष्मी की पूजा हो ताकि चिन्ता फिकर और ग़म न सतावे।

५. सफर में साथी आवश्य होना चाहिए।

६. नीयत साफ हो।

यदि यात्रा में साथी है तो यात्रा आसानी से कट जाती है। साथी दुख सुख का सांझी होता है, प्रेमी होता है। साथी से बढ़कर संसार में कोई वस्तु नहीं है। मां बाप स्त्री बच्चे भाई बहन मित्र ये सब यात्रा के साथी ही हैं। यात्रा के काटने में आसानी हो जाती है। इन सब से प्रेम करो। प्रेम से अपना लो। प्रेम की डोरी से बांध लो। देखो फिर जीवन की यात्रा कितनी अच्छी हो जाती है। कोई कष्ट न होगा।

'शब्द'

दीन मुझे अति प्यारे लागें मैं दीनों का प्यारा।
जो कोई मेरी शरन में आवे, मैं इसका रखवारा।
कर्म धर्म की आस न राखे, राखे मेरा सहारा।

किसका योग कहां का जप तप, कैसा ज्ञान विचारा।
जो कोई मुझको भजे निसदिन, वह आंखों का तारा।
मैं दीनों के मन में बसता, और है भरम पसारा।
वह तो मेरे प्राणों के प्यारे, मैं इनका आधारा।

"सब को राधास्वामी"

मेरी अमरीका यात्रा

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर

दिनांक १८ जुलाई १९७६ मासिक सत्संग

मैं इस बार अमरीका और इंगलैंड गया। अढ़ाई महीने के बाद वापिस आया हूं। अपनी आत्मा से पूछता हूं कि फकीर ! तू क्यों गया था ? दोस्तो ! मैं साधारण हिन्दु हूं। सात बर्ष की आयु से राम को मिलने निकला था। ये मेरे पुराने संस्कार थे। मौज हजूर दाता दयाल जी महाराज के चरण कमलों में ले गई। उन्होंने मुझे राधास्वामी या संतमत दिया। उनकी बाणियां पढ़ी। उनमें लिखा हुआ है कि राम और कृष्ण काल के अवतार थे। वेदान्त और सूफी कालमत में हैं। हिन्दु, मुसलमान जैन, बुद्ध ईसाई

इनमें से कोई भी आगे नहीं गया। इन बातों को पढ़कर मेरे दिल में बहुत दुख हुआ। मैं सोचता था कि मैं तो मालिक को मिलने निकला था यहां कहां फंस गया जहां मेरे पूर्वजों का खण्डन है। क्योंकि हज़ूर दाता दयाल जी महाराज पर मेरा पूर्ण विश्वास था और उनको मैं छोड़ नहीं सकता था इसलिए उस समय मैंने प्रण किया था कि इस मार्ग पर सच्चा होकर चलूंगा और जो मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊंगा। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे आज्ञा दी थी कि फकीर! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। उन्होंने मेरे नाम लिखा था।

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा।
दुखी जीव को अंग लगाकर ले, जा गुरु के देसा।
तीन ताप से जीव दुखी हैं, निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी।
तेरा रूप है अदभुत अचरज, तेरी उतम देही।
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल सनेही।

क्योंकि उन्होंने मेरे ज़िम्मे यह कर्तव्य लगाया हुआ था। इसलिए जब उनका चोला छूटा तो मैंने उनके नाम तार दी जिसका अर्थ यह है कि मैं सच्चे

दिल से वायदा करता हूं कि मैं आपकी शिक्षा को अपनी शक्ति और योग्यता अनुसार सारे संसार में फैलाऊंगा। शायद इसी कर्म के कारण में अमरीका और इंगलैंड गया। मैं वहां कैसे गया? डाक्टर ईश्वर चन्द्र शर्मा (Dr. I. C. Sharma) राजस्थान यूनिव्रसिटी में फिलासोफी का प्रौफैसर था। फिलासोफी और संस्कृत का M. A. है और Ph. D. है। वेदों का जानने वाला है। उसके दिल में निर्वाण को प्राप्त करने का जज्बा था। १९५९ में उसके अन्तर एक रूप प्रकट हुआ और उससे कहा कि इस जीवन में तुमको निर्वाण मिल जायेगा। मगर उसको यह पता नहीं था कि यह रूप किसका है। १९६५ में मैं दिल्ली में सत्संग करा रहा था तो वह अचानक वहां आ गया। उसने मुझे पहचाना। सत्संग के बाद मेरे पास आया और कहा कि १९५९ में आपने मेरे अन्तर प्रकट होकर मुझे कहा था कि तुमको इसी जन्म में निर्वाण मिल जायेगा। मैं तो था नहीं। लेकिन उसका मुझपर विश्वास बैठ गया। कहने लगा कि मैं गरीब आदमी हूं और तीन महीने के लिए अमरीका जा रहा हूं। मैंने एक नोट पर Luck to Dr. I. C.Sharma

लिखकर उसको दे दिया। क्योंकि उसको मुझपर विश्वास हो गया था तो जब वह वहां भाषण देता तो उसके सामने मेरा रूप प्रकट हो जाता और लोगों से कहता कि दयाल फकीर मेरे सामने खड़ा है और जो वह मुझे आज्ञा देता है वही मैं तुम लोगों को कह रहा हूं। इस कारण अमरीका के लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रकट होने लग गया और उनको नाना प्रकार के चमत्कार दिखाने लग गया। इसलिए उन लोगों ने १९७२ में भी मुझे बुलाया और मैं वहां तीन सप्ताह रहा। अब फिर उन्होंने मुझे बुलाया और मैं वहां गया। मैंने २९ अप्रैल को हवाई जहाज़ पर चढ़ना था लेकिन किसी कारण वश न चढ़ सका और दिल्ली ठहरना पड़ा फिर ३ मई को देहली से अमरीका गया। मैंने दिल्ली में चार सत्संग दिये। वे छपेगें। किताब का नाम शब्द योग होगा। यह मेरे जीवन का निचोड़ है।

अमरीका में मैंने बस, रेल, कार और हवाई जहाज़ द्वारा लग भग ३५ हज़ार मील का सफर किया। अमरीका के छः प्रान्तों में लगभग ३५ भाषण दिये। तीन सत्संगों में तो पन्दरह २ सौ आदमियों के करीब

लोग आये और बाकी सत्संगों में कम थे। मैं अमरीका में ४५ मिण्ट रेडियो पर और तीन बार २०-२० मिण्ट टैलीवीजन पर बोला। आप लोग मेरे दौरे के बारे जानना चाहते हैं कि मैंने वहां क्या कहा। मैंने वहां यह कहा कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता और न ही कोई और महात्मा जाता है। यह मैं क्यों कहता हूं? यहां होशियारपुर में दो आदमी और दो स्त्रियें मर गईं उन्होंने मरते समय कहा कि बाबा चरणसिंह जी महाराज और बाबा फकीर आये हैं। राधास्वामी कहा और प्राण त्याग दिये। ऐसे ही ओं प्रकाश दर्ज़ी ने मुझे बताया कि उसका बाप मर गया। रात को वह लाश के पास बैठा हुआ था। वह कहता है कि मुझे नींद आने लगी। मैंने क्या देखा की आप आये और मेरे बाप को साथ लेकर आसमान की ओर चल दिये। आगे २ आप थे, पीछे मेरा बाप था और उसके पिता के पीछे बाबा चरणसिंह था। कुछ दिनों के बाद बाबा चरण सिंह जी यहां आ गये। मैंने पत्र लिख कर भेजा कि मैं आपसे मिलना चाहता हूं। उन्होंने अपनी कार भेज दी। मैं उनके पास गया। बातचीत हुई। मैंने कहा कि

यहां दो आदमी और दो स्त्रीयें मरीं। मरते समय उन्होंने कहा कि बाबा चरणसिह जी और बाबा फकीर हमको लेने आये हैं। मैं तो गया नहीं आप बताईये कि क्या आप गये थे? उन्होंने कहा कि पण्डित जी, मैं नहीं जाता। मैंने कहा कि यहां आपने $1\frac{1}{2}$ लाख संगत को पीछे लगाया हुआ है। जब आप नहीं जाते तो फिर आप लोगों को क्यों साफ २ नहीं बताते और क्यों उनको अज्ञान में रखा हुआ है? जब मैं ज़रा ज़ोर से बोला तो उसका सेक्रेट्री झट अन्दर आया और कहने लगा कि पडिण्त जी! सच कहने का दस्तूर नहीं है। मनसूर ने सच कहा उसको सूली पर लटकाया गया। मैंने कहा कि अगर यही बात है तो मेरे गोली मारो (मैं कोट के बटन खोल कर खड़ा हो गया) लेकिन यह याद रखना कि यदि एक फकीर मर गया तो हजारों मेरे जैसे और फकीर पैदा हो जायेंगे। कुछ समय बाद संत कृपालसिह जी यहां मानवता मन्दिर में मुझे मिलने के लिए आ गये। हज़ूर बाबा सावनसिह जी महराज के फोटो के सामने बैठे हुये थे। मैंने कहा कि देखिये! यह आपके गुरु महाराज की फोटो है और वह मेरे गुरु महाराज का Statue है।

आप सच बताइये कि जब आपका रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है तो क्या आप उनके अन्तर जाते हैं और क्या आपको इन घटनाओं का पता होता है ? उन्होंने मुझे स्पष्ट शब्दों में कहा कि पण्डित जी ! मैं नहीं जाता और न ही मुझे किसी बात का पता होता है। भाई नन्दुसिंह जी महाराज ने भी मेरे सामने माना कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। क्योंकि उन्होंने मेरे सामने माना कि हम लोग किसी के अन्तर नहीं जाते। इसलिए मैंने अमरीका में बड़े उत्साह से कहा कि कोई गुरु किसी के अन्तर नहीं जाता। मैंने अमरीका में उन लोगों से कहा कि तुम लोग यह समझते हो कि तुमको तुम्हारे अन्तिम समय पर हज़रत इसामसीह ले जायेगा या राधास्वामी मत वाले या कोई और लोग यह कहते हैं कि अन्त समय पर उनको गुरु ले जायेगा, यह धोखा है, फरेब है और इन गुरुओं ने अपने निजी मान प्रतिष्ठा और धन धान्य के लिए लोगों को अज्ञान में रखा है और ग़लत विचार दिया है। मेरा अपना अनुभव यह है कि लोग मरते हैं और कहते हैं कि बाबा जी आये, कोई कहता है कि हवाई जहाज़ लाये, कोई कहता है

कि पालकी लाये या घोड़ा लाये, लेकिन मैं तो कही जाता नहीं । इसलिए कहता हूं कि ऐ संसार वालो ! तुमको गुरुओं और पंथों ने सचाई न बता कर अज्ञान में रखा है और लूटा है । यहां भी यही कहता हूं और बाहर भी यही कहता हूं और यही मैंने अमरीका और इंगलैण्ड में कहा । जो जाता है वह है तुम्हारा विचार, विश्वास और श्रद्धा ।

क्योंकि मेरे ज़िम्मे जगत कल्याण का कर्तव्य है इस लिए मैंने इस भेद को खोला है । मैं हूं समय का सन्त सत्गुरु । क्योंकि अब समय बदल गया है और सिवाय इस सच्चाई के खोलने के संसार का अज्ञान दूर करने का कोई उपाय मेरी समझ में नहीं आया इसलिए अपने कर्तव्य को पूरा करने के लिए मैंने इस भेद को खोला है और दूसरे मेरे ग्रह ही ऐसे हैं । एक ज्योतिषि ने मुझे बताया था कि आप संसार में कोई ऐसा काम करेंगे जो आज तक किसी ने नहीं किया और यह है भी ठीक । तीसरी बात यह है कि हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे बारे बहुत कुछ लिखा है । उनका दिया हुआ संस्कार काम कर रहा है । मैं अमरीका गया । एक दिन

शिकागो (अमरीका का नगर है) में डाक्टर I. C. Sharme का फिलासोफी पर योग सम्मेलन में भाषण था। मैं भी वहां गया और तीन घण्टे वहां ठहरा। बहुत से लोग मुझे वहां मिलने आये। उनमें एक आदमी वहां की यूनिव्रसिटि में पामिस्टरी का प्रौफैस्सर था। उसने मेरा हाथ देखा और कहा कि आपके हाथ में ऐसी लकीरें हैं जिनका प्रभाव यह है कि जिसको अशीर्वाद देंगे या जिसके सिर पर हाथ रख देंगे उसकी मनोकामनायें पूरी होनी चाहिएं और यह जो आपके दायें बाज़ू पर तिल है यह सिद्ध करता है कि आप एक महा रुहानी आध्यत्मिक आदमी हैं।

संसार यह समझता हैं कि उनके अन्तर स्वप्न में या समाधि में जो रूप प्रकट होता है वह वाहर से आता है लेकिन मेरा अनुभव यह कहता है कि न राम बाहर से आकर किसी के अन्तर प्रकट होता है, न कृष्ण प्रकट होता है, न हज़रत मुहम्मद आता है, न कोई देवी देवता आता है, न हज़रत ईसा मसीह आता है, न हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज आते हैं और न बाबा फकीर आता है यह भ्रम और अज्ञान

है। इसलिए मैंने इस भेद को खोला है। इस अज्ञान के कारण मानवजाति नाना प्रकार के धर्मों में बट गई और इसका परिणाम यह निकला कि आपिस में घृणा द्वेष पैदा हो गया और धार्मिक पक्षपात आरम्भ हो गया और एक दूसरे के सिर कट गये। क्यों ? हर एक धर्म पंथ और डेरे के पैरोकार यह समझते हैं कि हमारा इष्ट सच्चा है और दूसरों का सच्चा नहीं। इस भ्रम को दूर करने के लिए सन्त कबीर, गुरु नानक और राधास्वामी दयाल आये और उन्होंने कहा।

काल ने जगत अजब भरमाया मैं कासे करूं बखान।

यह सारा मन का खेल है। मन ने जीवों को भरमाया हुआ है। मगर परिणाम यह हुआ कि कबीर साहिब, गुरु नानक साहिब और राधास्वामी दयाल के पैरोकार उनकी शिक्षा को न समझ कर नाना प्रकार की गद्दियों में बट गये। कोई व्यासिया बन गया, कोई आगरिया बन गया, कोई सावन आश्रमिया बन गया और कोई कोई बन गया। आपिस में घृणा पैदा हो गई और मुकद्दमे-बाज़ी शुरू हो गई। इस दशा को देख कर प्रकृति ने मेरे मस्तिष्क को हिलाया और मैं अनामी धाम से इस

फकीर के चोले में संसार को असलियत बताने के लिए आया हूं। मैं संसार को यह कहना चाहता हूं कि ऐ मानव ! कोई भी व्यक्ति अपने कर्म के फल से बच नहीं सकता। जैसी तेरी नीयत होगी वैसी तेरी मुराद होगी। भूल जाओ कि तुमने बाबे फकीर से या किसी और गुरु से नाम लिया हुआ है या तुम राम या कृष्ण के पुजारी हो और तुम अपने पाप कर्मों से बच जाओगे। यही मैंने अमरीका और इंगलैंड में कहा। उन लोगों से मैंने यह भी कहा कि तुम यह कहते हो कि हज़रत-ईसा-मसीह तुमको सतलोक ले जायेगा। लेकिन यह सोचो कि हज़रत ईसा का अपना परिणाम क्या हुआ ? सूली पर चढ़ाया गया। हाथों में कील, पांव में कील और छाती में कील ठोक दिये गये। अब तुम सोचो कि जो स्वयं नहीं बच सकता वह तुमको कैसे सतलोक ले जायेगा ? उस समय जब मैं हज़रत-ईसा-मसीह के बारे यह कहने ही लगा था तो Dr. I. C. Sharma ने मेरा पांव दबाया कि आप ऐसा न कहें। लेकिन मैंने कहा कि मैं इस बात की परवाह नहीं करता जो सच्चाई मेरी समझ में आई है मैं

उसको ब्यान करने का हक रखता हूं। मैंने उन लोगों से सवाल किया कि जो ईसा मसीह अपनी तकलीफ को दूर न कर सका वह तुम्हारी क्या मदद करेगा। मैं वह कहता हूं जो मैंने खुद समझा है। किसी की मरज़ी हो सुने, न मरज़ी हो न सुने। मेरे पास आये या न आये, मेरे साथ बात करे या न करे। मैं हूं सतपुरुष और अवतार लेकर आया हूं। क्या कहने के लिये कि ऐ इन्सान! जो करेगा उस का फल भोगना पड़ेगा,। स्वामी जी ने कहा है :-

कर्म जो जो करेगा तू अन्त में भोगना पड़ना।

गोसाईं तुलसी दास जी ने लिखा है :-

कर्म प्रधान विश्व कर राखा।
जो जस कीना तैसो फल चाखा।

एक और महात्मा ने लिखा है कि मालिक के सुमरिन करने से आदमी बाइज्ज़त और बादौलत हो जता है, और कोई दुशमन उस का कुछ नहीं कर सकता। लेकिन देखने मैं यह आया है कि उस महात्मा के अपने ही परिवार के आदमियों ने उसका विरोद्ध किया और उनको बदनाम किया, तो मानना पड़ता है कि या तो उन्होंने मालिक का सुमरिन नहीं

किया और या उनको उनके कर्म का फल मिला। और सुनो, अर्जुन ने श्रीकृष्ण के मुख से श्रीमद्भगवद गीता के अठारह अध्याय सुने और श्रीमद्भागवद कहती है कि अर्जुन नर्क में गया। इसलिए अगर अर्जुन श्रीकृष्ण जी के मुख से पूरी गीता सुनने के बाद भी अपने कर्मानुसार नर्क में जाता है तो तुम लोग बेशक कोई ग्रन्थ पड़ो, रामायण पढ़ो या कुरान शरीफ पढ़ो या राधास्वामी मत की बाणी पढ़ो, तुम अपने कर्म के फल से बच नहीं सकते। जो कर्म किये हैं उनका फल ज़रूर भोगना पड़ेगा। बड़े २ सन्त और महात्माओं ने अपनी आखरी उमर में काफी तफलीफ उठाई। उनको भी अपने कर्म का फल भोगना पड़ा। इस लिए मैं यह कहना चाहता हूं कि ऐ इन्सान! तू इस भरोसे पर मत रह कि तू रामायण पढ़ता है या भागवत का पाठ करता है या जपजी साहिब का पाठ करता है, जो कर्म तुमने किये हैं या करोगे उन का फल अवश्य भोगना पड़ेगा। कबीर साहिब ने लिखा है कि :-

कर्म गति टारे नाहिं टरे।

मुनि वसिष्ट से पन्डत ज्ञानी, सोध के लगन धरी ... ...

सीता हरण मरन दशरथ का, बन में विपत पड़ी ... ...

यह सब क्या था, कर्म का फल।

"I have Come on this earth from infinity in the form of Faqir

क्या कहने के लिए ? कि ऐ इन्सान, तू अपने कर्म और अमल को ठीक कर और इस भरोसे पर मत रह कि तू राम या कृष्ण का पुजारी है या तू कुरान शरीफ को पढ़ता है या तू सैयदों अथवा ब्रह्मणों को सन्तान है। जो तुम करोगे उस का फल हर हालत में तुम को भोगना पड़ेगा। हज़ूर दाता दयाल जो महाराज ने मुझे शिक्षा को बदल जाने का हुकम दिया है इसलिए मैं दुनियां की बदनामी सहता हुआ भी शिक्षा को बदल रहा हूं और जो कुछ मैं कह रहा हूं यह बिलकुल ठीक है। दुनियां मेरी सचाई सुनने के लिए तैयार नहीं है। जिस की मरज़ी हो मेरे पास आये या न आये, मेरी बात को सुने या न सुने, मैंने जो खुद अनुभव किया वह कहा। मैं जब देखता हूं कि मेरे दाता दयाल जी महाराज मनोबल के इतने धनी थे Optimistic थे और उनकी धाम उजड़ गई तो फिर कैसे कहूं कि कर्म का फल

भोगना नहीं पड़ता। उन को पिछली उमर में एक ज्योतिषि ने बताया था कि महाराज ! आपको राहू आ गया है और यह नुकसान पहुंचायेगा तो राहू आया ? प्रारब्ध कर्म का फल।

मैं जो कुछ अमरीका कह कर आया हूं वही यहां कह रहा हूं और यही मेरा संसार की मानव जाती के लिये पैग़ाम है। अमरीका में मैंने कहा कि तुम लोग धनी होते हुए भी अशान्त हो। क्यों ? तुम लोग इस लिए अशान्त हो कि तुम लोग महा कामी हो। वहां Sex पर Control नहीं है। विषय विकार अधिक है। Divorce अर्ताथ तलाक का रिवाज़ ज़ोरों पर है। यह उन लोगों की अशान्ति का मूल कारण है। एक रात मैं एक मकान में सोया हुआ था। रात को मुझे पेशाब की हाजत हुई। जब मैंने पेशाब करने वाला बरतन उठाने के लिए चारपाई के नीचे हाथ फैलाया तो मेरा हाथ एक आदमी के शरीर पर पड़ा। मैंने फौरन बती जलाई। देखा तो मेरी चारपाई के नीचे एक नौजवान लड़का पड़ा हुआ था। मैंने पूछा तू यहां क्यों लेटा है, यहां क्यों आया है और क्या कहना चाहता है। कहने लगा बाबा जी, पांच लड़कियां

मुझे तंग करती हैं और मैं उन के साथ काम भोगने के लिए विवश हूं, मैं दुखी हूं और अशान्त हूं। एक दिन एक युवक और आया वह भी बहुत अशान्त था और Sex के कारण दुखी था। तो मैंने वहां क्या कहा और यहां क्या कहना चाहता हूं कि ऐ इन्सान ! तेरी अशान्ति का कारण बहुत हद तक तेरी सेहत की खराबी, तेरी तन्दरुसती की कमी है और इस सेहत की खराबी और तन्दरुसती की कमी का मूल कारण काम अंग की ज्यादती है।

जहां काम तहां नाम नहीं, जहां नाम नहीं काम।
रवि रजनी दौ न मिलें, एक ठाम एक याम।

यह मेरा अपना अनुभव है। कैसे ? $13\frac{1}{2}$ वर्ष की आयु में मेरी शादी हुई और $15\frac{1}{2}$ वर्ष की आयु में गृहस्थ में फंस गया, सन 1905 इसवी में नाम लिया और सन 1916 इसवी तक न मुझे प्रकाश आया न शब्द, मैं बहुत अशान्त रहा। रोया करता था कि मुझे राम मिल जाय और मेरे दुख दूर हो जायें। लेकिन भगवान मुझे मिलता कैसे, मैंने तो भगवान को खोया हुआ था। लेकिन मुझे इस का पता नहीं था। बसरे बग़दाद गया, वहां तम्बूरा बजाता, अपने

तबाज़ाद भजन गाता और बहुत रोता, पण्डित पुरुषोतम दास जो वहां मेरे साथ थे उन्होंने मेरी हालत देख कर हज़ूर दाता दयाल जी महाराज को लिखा कि महाराज, फकीर चन्द आपके प्रेम में बहुत रोता है। हमको भी ऐसा प्रेम दीजिये। तो हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने पण्डित पुरुषोतम दास को जवाब दिया कि जिस के कर्म में रोना है, वह रोये तुम क्यों फकीर चन्द की नकल करना चाहते हो। इसलिए कहता हूं कि अपने शारीरिक और मानसिक ब्रह्मचर्य का पालन करो वरना रोना पड़ेगा। कोई रोक नहीं सकता। मेरा रोना कैसे बन्द हुआ। 12 साल मैं बसरे बग़दाद में रहा। वहां अकेला था और स्त्री से अलग था। वहां सुन्दरता बहुत है। इसलिए मैं शहर में नहीं जाता था। लेकिन वहां भजन किया करता था। मेरी ब्रह्मचर्य की जो कमी थी वह पूरी हो गई और मेरा भजन बनने लग गया मैं हूं संतगुरु वक्त लेकिन मुझे कोई सुरखाब का पर नहीं लग गया मैं यह कहना चाहता हूं कि मेरी तालीम यह है कि मुझे मत्थे टेकने से या मुझे चढ़ावा देने से या मेरी तारीफ करने से तुम पार नहीं जाओगे। मेरी

बात को सुन कर, समझ कर और उस पर अमल करने से तुम्हारा बेड़ा पार होगा। एक तो मैंने अमरीका में यह कहा और दूसरी बात उन को यह कही कि तुम लोग मांस खाते हो, मास खाने वाला आदमी रूहानियत को हासल नहीं कर सकता। मुझे दुख है कि हमारे हिन्दोस्तानी भाई जो वहां रहते हैं वह कोई संत कृपाल सिंह जी का चेला है और कोई ब्यास वालों का चेला है, वह दूसरा मांस खाना तो एक तरफ रहा बहुत से आदमी गौ का मास खाते हैं और कहते हैं कि यह दूध देने वाली गाय नहीं है। जब आदमी के पास पैसा काफी हो जाता है तो वह अपने आपको और अपनी असलियत को भूल जाता है। मैं यह क्यों कहता हूं कि मांस खाने वाला रूहानियत को हासल नहीं कर सकता, जब तक मन निर्मल नहीं है कोई आदमी मन के रूप को नहीं समझ सकता। न ही मन से निकल सकता है। मन का निर्मल होना अन्न पर निर्भर है। ऋषियों ने रजोगुणी, तमोगुणी और सतोगुणी खुराक की अलग २ काफी व्याख्या की है। इस वास्ते परमार्थ चाहने वालो को शराब और मांस से प्रहेज़ करना चाहिए।

अमरीका में Dr I. C. Sharma के दायरे में लग भग 800 पुरुष स्त्रियें हैं जो मुझे मानते हैं। उन में से लग भग 80 प्रतिशत लोग मांस नहीं खाते। आप मांस खाओ या न खाओ मगर मांस खाने से मन निर्मल नहीं होता और सुरत आगे नहीं जा सकती। जिस तरह हमारी सरकार ने सीग्रेट की डब्बी पर यह लखवा दिया है कि सीग्रेट पीना सेहत के लिए हानीकारक है ऐसे ही इगलैण्ड में भी यह कहा जाता है कि मांस खाना सेहत के लिए हानीकारक है।

मैंने वहां कहा कि अगर तुम परमार्थ चाहते हो तो पहले अपने आप को जानने की कीशिश करो कि तुम हो कौन! यह मांस न खाना या Sex पर Control रखना तो जरूरी है ही मगर साथ ही अगर कोई अपने आध घर जाना चाहता है तो उस को यह जानना भी ज़रूरी है कि वह है कौन। जब तक कोई आदमी राम या कृष्ण या किसी गुरु की पूजा करता रहेगा या वेदों की या किसी और चीज़ की Research करता रहेगा वह मंजल पर नहीं पहुंच सकता। इसलिये पहले अपनी Research करो फिर

मंजल पर पहुंचोगे। मैं सहस दल कमल, त्रिकुटी, सुन्न महासुन्न और भंवर गुफा की Research करता रहा। 12-12 घण्टे अभ्यास किया। इसी खब्त में काफी समय लग गया मगर शान्ति न मिली। मैं तो राम की या भगवान की या गुरु की खोज करता था। ऐ सत्संगियो! दया तो हज़ूर दाता दयाल जी महाराज की है लेकिन आप लोगों का भी मैं बहुत अभारी हूं कि आप लोगों के अनुभवों के कारण मैं अपनी खोज करने के लिए विवश हुआ। कैसे, जब मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है और, उनके काम करता है लेकिन मैं नहीं होता तो सोचने के लिए मजबूर हो गया कि जब लोग अपने विश्वास से मेरे रूप को बना लेते हैं तो मेरे अन्तर भी जो कुछ प्रकट होता है क्या यह मेरा अपना विश्वास नहीं है। इसलिए मैं मन को छोड़ कर आगे जाने के लिए और अपनी खोज करने के लिए विवश हो गया। कल दिल्ली से K. C. Jain. की चिट्ठी आई कि मैं तो यहां हूं और बाल बच्चे चण्डीगढ़ में हैं। मेरी लड़की वहां फेल हो गई। मुझे पता लगा तो मैंने वहां कई आदमियों को लिखा कि लड़की के परचे निकलवा कर देखो।

मुझे लड़की के फेल होने का बहुत दुख था क्योंकि लड़की बहुत लायक है। काफी पत्र लिखने के बाद भी वहां काम न बना। आप अमरीका में थे। रात को आप को याद किया कि अगर अमरीका वाले आप के ज्यादा भक्त हैं तो हम भी कम नहीं। आप उस समय आ गये और फरमाया कि क्यों घबराते हो। स्कूल को एक प्रार्थना पत्र लिख दो और सब कुछ ठीक हो जायगा। आप फिर चले गये। सोचा कि पत्र तो पहले भी कई लिख चुका हूं, कुछ सफलता नहीं मिली। लेकिन हुकम मानना जरूरी है। तीसरे दिन प्रातः मैं दिल्ली से चला और एक बजे के लगभग चण्डीगढ़ पहुंच गया। १५ मिन्ट के बाद मेरी लड़की स्कूल से आई और बाहर से ही खुशी के मारे ज़ोर २ से चिल्लाने लगी। ममी २ मैं पास हो गई हूं उस को मेरे आने का पता नहीं था। मैंने उसे बुलाया और कहा कि कैसे पास हुई। वह कहने लगी कि मैंडम ने आज मुझे बुलाया और कहा कि तुम्हारे डैडी का पत्र आया और मैंने तुम्हारे परचे निकलवाये। परचे ठीक हैं और तुम पास हो। टीचर की ग़लती

है। मैडम ने मेरे सामने टीचर को बुला कर बहुत झाड़ डाली।

जब उसने मुझे लिखा तो मैं सोचने के लिये विवश हूं कि मैं तो गया नहीं। चार दिन का जीवन है। अगर सच्चाई ब्यान नहीं करूंगा तो दोषी हूं और जाऊंगा कहां ? कर्म का फल भोगना पड़ेगा। एक और आदमी का पत्र आया। वह लिखता है कि मैं रात को किसी ज़रूरी काम के लिए जा रहा था। अन्धेरा था आगे से एक आदमी आया और कहने लगा कि आगे मत जाओ। आगे बहुत खतरा है। मैं डर गया कि अब कहां जाऊं और कैसे जाऊं। आप का फोटो मेरी जेब में था। मैंने दर्शन किये और प्रार्थना की कि मेरे जाने का कोई प्रबन्ध हो। इतने में एक बस (Bus) आई और मैं उस पर सवार होकर वापिस आ गया और खतरे से बच गया। अब आप सोचो, कि मैं तो गया नहीं और न ही मुझे किसी बात का पता है। वह आदमी यह समझता है कि बाबा जी ने उस आदमी के रूप में आकर मुझे चेताया कि आगे मत जाओ खतरा है, इसलिये मैं

उस खतरे से बच गया। यह सब क्या है ? माया, Impression और Suggestions जो संस्कार दिमाग़ पर पड़े होते हैं वही शकलें बना कर समाने आते हैं। इसलिए आप लोगों के अनुभवों के कारण मैं मन को छोड़ने के लिए विवश हुआ। मन से आगे है, प्रकाश और शब्द। मैं जब प्रकाश को देखता हूं और शब्द को सुनता हूं तो मैं उस चीज़ की तलाश करता हूं जो प्रकाश को देखती है और शब्द को सुनती है, वह क्या है ? वह मैं हूं, तो अपनी खोज करने से मुझे यह मिला कि मैं कौन हूं। अब अगर मैं यह कह दूं कि मैं ही सब कुछ हूं तो मुझ में शक्ति होनी चाहिये लेकिन मैं तो कुछ नहीं कर सकता। चलो मैं न सही दुसरे संत भी कुछ न कर सके, उन्होंने भी बहुत तकलीफ उठाई, बहुत दुख उठाये और कुछ न कर सके। तो हम क्या हैं ? चेतन के एक बुलबुले, परमतत्व की एक अंश। यह सब परम तत्व का खेल है। हम उसी से बनते हैं और उसी में समा जाते हैं। मुझे क्या मिला ? शान्ति। लेकिन अपनी खोज के अधार पर कहता हूं कि में खुदा नहीं बन गया। मैं चेतन का एक बुलबुला हूं और अपनी प्रकति के

अनुसार काम करता हूं। इस लिये कहना चाहता हूं कि ऐ इन्सान ! तू अपने आप को जान, तू चेतन का एक बुलबुला है और अपनी प्रकृति के अनुसार खेल खेलने के लिये विवश है, We are bound to play our part । खोज के बाद क्या मिला । खोज करते करते मन थक गया और शान्ति मिली ।

मन तू थकन थकत थक जाई ।
बिन थाके तेरा काज न सरे है, फिर पाछे पछताई ।

मैंने जीवन में बहुत अभ्यास किया और अब थक गया । अब आप लोगों की दया से मेरी यह थकावट दूर हुई । जो कुछ जीवन में मैंने समझा है अगर यह ठीक है तो जिन महात्माओं ने परदा रखा, दुनियां को सच्चाई ब्यान नहीं की लोगों को अज्ञान में रखकर उनके धन दौलत मान और प्रतिष्ठा ली, अपने डेरे और गद्दियां बनाई तो क्या यह तर गये । अगर कर्म का फल भोगना पड़ता है तो यह भी अपने कर्म के फल से न बचें होंगे और न बचेंगे । इनके जीवन के हालात को देखकर मैं डर गया । इसलिए मैंने जिन्दगी में पूरी सच्चाई से काम लिया है । पता नहीं मेरा अंजाम क्या हो । लेकिन मुझे इस बात से

शान्ति है कि मैंने गृहस्थ में या अपनी नौकरी में या गुरु से या सत्संगियों से कोई धोखा फरेब नहीं किया अभ्यास करता था, अब थक गया। आप लोगों की दया से बात समझ में आ गई। जो चीज़ प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है और शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है, उस का अन्त नहीं मिलता। लेकिन जब कभी वहां पहुंच जाता हूं तो अपने आप को भूल जाता हूं। सोचता हूं कि क्या तू गुमराह हो गया, नहीं। क्यों ? स्वामी जी महाराज ने कहा है :-

नहीं सत्‌नाम न नाम अनामी।

वह क्या अवस्था है ? वहां पहुंच कर ढूंडने वाली चीज़ खुद खतम हो जाती है। सतनाम या अनामी रहता है या नहीं, इस का किसी को कोई पता नहीं। क्योंकि वहां पहुंच कर वह खुद गुम हो गये। इसलिए उसको अनाम कह दिया। वास्तव में किसी को कोई पता नहीं कि वह क्या है। सब ने अपने २ पंथ चलाने के लिए रोचक और भयानक बातें कहीं :-

जब लग तो कर जीव रहतु है, तब लग परदा भाई।
टूटि जाय ओट तिनका की, रसिक रहै ठहराई।

जब तक कोई मानता है तब तक परदा है। मेरा तिनका तुम लोगों ने तोड़ा। अब हज़ूर दाता दयाल जी महाराज तो हैं नहीं इसलिए आप लोगों को सत्गुरु मानता हूं, क्योंकि आप लोगों से मुझे, यह ज्ञान मिला। यही हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे फरमाया था कि तुम को सच्चे सत्गुरु के दर्शन सत्सगियों के रूप में होंगें और अब हो गये। इसलिए अब अगर मैं आप को सत्गुरु न मानूं तो में दोषी हूं। कृषक की और दयाल दास की सेवा मैंने की और अब भी करता हूं। दयाल दास यहां रहा, उसके पास स्त्रियें आने लग गईं और यह बात मुझे पसंद नहीं थी। मैंने दुनियां में मर्यादा कायम करनी है, तोड़नी नहीं। गो मैं जानता हूं कि यहां सब माया का खेल है। न कोई किसी का वाप है, न मां है, न भाई है और न बहन है। मगर फिर भी सर्यादा का कायम रखना ज़रूरी है। इसलिए मैंने दयाल दास को कहा कि तुम्हारे पास स्त्रियों का आना ठीक नहीं है। इसलिए मैंने दयाल दास को कहा कि या तो उनको बंद करो या तुम खुद चले जाओ। मैं असूल की बात करता हूं।

सकल तेज तज होय नपुन्सक, यह मति सुन ले मेरी।
जीवत मिर्तक दशा विचारे, पावै वस्तु धनेरी।

नपुन्सक है नामर्द। जब मैं वहां जाता हूं तो अपनी खोज के बाद मैं इस परिणाम पर आया हूं कि मैं कौन हूं ? जब मैं अपने आप को चेतन का एक बुलबुला समझता हूं तो इस का यह मतलब है कि मैं कुछ नहीं बना और जब मैं बना ही कुछ नहीं तो फिर मैं नपुन्सक हुआ या नहीं। आज मैं अपने आप को भाग्य शाली समझता हूं कि जो कुछ मैंने खोज की है वह ठीक है। वेदान्ती कहता है "मैं ब्रह्म हूं" और सन्तों ने कहा कि जहां संत पहुंचे, वहां परमात्मा भी नहीं पहुंचा। सिवाय मेरे किसी सन्त ने यह नहीं कहा कि मैं चेतन का बुलबुला हूं।

या के परे और कछु नाहिं, यह मति सब से पूरा।
कहे कवीर मार मन चंचल, हो रहो जैसे धूरा।

आप लोगों ने संतों की बाणियां पढ़ी हैं। किसी ने यह नहीं कहा कि मैं चेतन का बुलबुला हूं। मैंने कहा और कबीर साहिब ने उस पर मोहर लगा दी। अमरीका में मैंने कहा कि जब ब्राह्मणों का राज था तो ब्राह्मणों की गुडी चढ़ी। इन के बारे ऐसी २ बातें कहीं गई कि लोग आज तक

ब्राह्मणों के पाओं को पूजते हैं। मुसलमानों के समय में मौलवियों और काज़ियों की गुडी चढ़ी। बौद्धों के समय भिक्षुओं की पूजा होती थी और जैनियों के वक्त में तीर्थंकर अरूज पर थे। इस वक्त संतमत या गुरुमत का ज़ोर है। हालांकि कि स्वामी जी महाराज या हज़ूर महाराज जी ने संतों के बारे नहीं लिखा लेकिन बाद में इन गुरु लोगों के बारे जो कुछ लिखा गया है उस को पढ़ मर या सुन कर हैरानी होती है। यह क्या कहते हैं कि जिस वृक्ष की दातन कोई संत कर ले तो उस वृक्ष को मनुष्य का चोला मिल जाता है। जिस ज़मीन की कपास के कपड़े कोई संत पहन लेता है उस ज़मीन का मालक तर जाता है, उस कपास को जिस ने काता है और जिस ने उस का कपड़ा बुना है वह भी तर जायेंगे। अब तुम सोचो, कि कितना पाखण्ड है। इन गुरुओं ने अज्ञानी जीवों को अपने जाल में फंसाने के लिये किस तरह मन घड़त बातें बना रखी है। इस तरह की रोचक बातों का नतीजा क्या है? सुनो, अमरीका में मेरे सत्संग में एक ६५ साल की विधवा स्त्री आई। उसने मुझे कहा कि मैं Legal Bachelor हूं और आप भी

Legal Bachelor हैं। अगर आप मुझ से शादी कर लें तो मेरे पास दो करोड़ डालर की सम्पति है। मैं वह बेच कर मानवता मन्दिर में दें दूंगी। मैंने कहा कि न मुझे तेरे पैसे की जरूरत है और न ही मैं तुम से शादी करूंगा। हां, अगर तुम वहां रहना चाहो तो या तो मेरी मां के रूप में रहो या मेरी बहन बन कर रहो और या मेरी लड़की बन कर रहो। उस ने मुझे ऐसा क्यों कहा ? उन लोगों को इन नाम निहाद गुरुओं ने यह ख्याल दिया हुआ है कि किसी गुरु की काम वासना तृप्त करना गुरु की सेवा है इस सेवा से तुम सतलोक पहुंच जाओगे। कितना धोखा है और कितना फरेब है। तुम खुद सोचो कि यह तो उस को पता है कि मैं ९० साल का बूढ़ा हूं और शादी के योग्य नहीं हूं और वह खुद भी शादी के योग्य नहीं है। तो फिर उसने किस लिए मुझ से शादी करने के लिए कहा ? इन महात्माओं ने दुनियां को अज्ञान में रख कर अपने झूठे मान प्रतिष्ठा और धन के लिए क्या २ नहीं किया।

मैं एक बार राय साहिब ज्ञान चन्द जी के गांव भंभूताड़ गया वहां मैंने सुखमनी साहिब की अष्ट

पदी पर सत्संग दिया। मेरे सत्संग को सुन कर एक नौजवान लड़की और एक सरदार बहुत देर तक रोते रहे। सत्संग के बाद मैंने लड़की से कहा कि बेटी ! तू क्यों रोती हैं ? कहने लगी कि मैं सत्संग सुनने जाती हूं लेकिन मेरे घर वाले जाने नहीं देते वह मुझे पीटते हैं। उसने अपने हाथों पर मुझे ज़खम दिखाये। मैं ने कहा कि जब घर वाले तुम को रोकते हैं तो तू क्यों जाती है और क्यों मार खाती है ? कहने लगी मुझे बाबा सावन सिंह जी बुलाते हैं। तो फिर तुम बाबा जी से जाकर कहो कि वह न बुलाया करें। क्या तुमने बाबा जी से यह पूछा है कि तुम को मार क्यों पड़ती है ? नहीं।

तुम लोग यह समझते हो कि जो रुप अन्तर में प्रकट होता है वह कहीं बाहर से आता है। तुम भूल में हो। कोई बाहर से नहीं आता। यह तमाम महात्मा मेरे सामने मानते हैं कि वह किसी के अन्तर नहीं जाते लेकिन पब्लिक में कहने का उन को साहस नहीं है क्योंकि फिर पैसा नहीं आता। फिर मैंने सरदार से पूछा कि भाई ! तुम क्यों रोते हो ? कहने लगा कि मैं बाबा जी महाराज का पाठी था। मैंने

सात नौजवान लड़कियों का सत लिया है। और अब अपने पापों पर रोता हूं। दुनियां मूर्ख है। कई लोग मेरे रिक्शा को मत्था टेकते हैं या मेरे रिक्शा चलाने वाला जो आदमी है उस को मत्था टेकते हैं। लोग भ्रम में हैं। तुम लाख रुपया दो और लाख मत्थे टेको तुम्हारा बेड़ा पार नहीं होगा। बेड़ा पार करना है तुम्हारे अमल ने। तुम को गुरु की सेवा का पता नहीं है, गुरु को खुश करना क्या है, गुरु की बात को समझ कर उस पर अमल करना।

मैं अमरीका में बीमार हो गया। सोचा कि फकीर! तेरा बुढ़ापा है। ९० साल की आयु है। तुमने क्या लेना है इस काम से? दिल में उदासी आ गई। जो कुछ वहां लोगों ने दिया मैंने सब बांट दिया। यहां तक कि अपना बिस्तर भी वहां दे दिया। इतफाक की बात है, कि वहां मुझे किसी ने एक किताब पढ़ने के लिए दी जिस में पण्डित नैहरू ने इन्द्रा के नाम खत लिखे हुए थे, जबकि इन्द्रा १४-१५ साल की थी। मैंने थोड़ी सी पढ़ी। उस में पण्डित नैहरू ने श्रीमति इन्द्रा गान्धी को बहुत हित दिया है। सोचा कि पण्डित नैहरू के हित से आज इन्द्रा गान्धी

क्या कुछ नहीं कर रही है। तुम को तो हजूर दाता दयाल जी महाराज ने इतना हित और संस्कार दिया है और तेरे सम्बन्ध में उन्होंने जो कुछ लिखा है आज तक किसी गुरु ने अपने चेले के बारे नहीं लिखा तो तुम क्यों उदास हो रहे हो। इस विचार द्वारा मुझे उत्साह हो गया और मैंने काम करना शुरु कर दिया। तो गुरु को खुश करना क्या है? हजूर बाबा सावनसिंह जी महाराज को या बाबे फकीर को तो तुम खुश कर सकते हो मगर असली गुरु कौन है और उसको खुश करना क्या है? सुनो :-

घट में दर्शन पाओगे सन्देह कुछ इसमें नहीं।
मैं तो घट में हूं तुम्हारे ढूड लो मुझको वहीं।
शब्द सुनते हो मेरा अन्तर में चित को साधकर।
सुरत मेरा रूप है इसको समझ लेना यहीं।

अब बताओ कि गुरु को खुश करना क्या है? आपने आपको चिन्ता रहित और शोकरहित रखना और दिलगीर न होने देना। संसार में अहिंसा परमोधर्मा क्या है? संसार में तो यह हर समय चलता रहता है। अपने आपको खुश रखना ही अहिंसा परमोधर्मा है और यही हमारा परम धर्म है। मैं जो कहता हूं

उसको सुनो, समझो और उसपर अमल करो, तब तुम्हारा बेड़ा पार होगा। सत्संग में जाके गुरु की सेवा किया करो। गुरु की सेवा क्या है?

दर्शन करे बचन पुनि सुने, सुन सुन कर फिर मन में गुने।
गुन गुन काढ़ लेवे तिस सार, काढ़ सार तिस करे अहार
कर आहार पुष्ट हुआ भाई, जग भव भय सब गईं गवाई।

अगर गुरु को रुपये देने से या कपड़े देने से कोई तर जाता तो यह बड़े बडे सेठ अपने पैसे के बल से सब तर जाते। यह लेना देना तो संसार का व्यवहार है। जो दोगे वह मिलेगा। मैंने अमरीका में भी यही कहा कि ऐ मानव! तू अपने आपको पहचान। मैंने बड़े २ वेदन्तियों के हालात भी देखे। अपने कर्म का फल सब को भोगना पड़ा। अमरीका में इन गुरुओं ने गलत शिक्षा फैलाई है। मैं वहां International University में गया। वहां मेरा भाषण था। वहां सन्त कृपालसिंह जी और बाबा चरणसिंह जी महाराज के चेले भी थे और वहां भारत के अमरीका में सफीर श्री कौल साहिब के सेक्रेट्री साहिब भी मौजूद थे। मैंने वहां अपने भाषण में कहा कि कोई गुरु किसी के अन्तर नहीं जाता, न

बाबा चरनसिंह जी, न सन्त कृपालसिंह जी और न कोई और गुरु। तो हमारा एक भारती भाई जो इनमें से किसी डेरे का चेला था वह उठकर कहने लगा कि वे जाते हैं। मैंने उससे कहा कि जब उन्होंने मेरे सामने माना है कि हम नहीं जाते तो तुम कैसे कहते हो कि वे जाते हैं ? वह चुप हो गया। मेरे भाषण के बाद श्री कौल साहिब के सैक्रेट्री साहिब ने भाषण दिया और कहा कि बाबा फकीर साहिब ने जो कुछ कहा है यह विलकुल ठीक कहा है। वहां मेरे पास एक पादरी आया। मैंने उससे पूछा की क्या आपका रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है ? उसने कहा कि हां ! तो क्या आप लोगों के अन्तर जाते हैं ? नहीं। तो फिर लोगों को सचाई क्यों नहीं बताते ? वह मान गया। मैंने वहां कहा कि मैंने "मनुष्य बनो" की अवाज़ उठाई है। मनुष्य बनो" कोई धर्म नहीं है। सिवाय तुम्हारे कर्म और अमल के कोई दूसरा तुमको तार नहीं सकता। गुरु नाम है समझ, विवेक और ज्ञान का। बाहर के गुरु ने तो केवल तुमको उपदेश करना है और मार्ग बताना हैं अमल करना तुम्हारा काम है। हर एक आदमी के अन्तर से Rediation

निकलती है । परमार्थ की भी, स्वार्थ की भी, बदी की भी और बीमारी की भी लेकिन आदमी को पता नहीं । यदि गुरु आमल नहीं है तो जो कुछ भी उसके अन्तर में होगा वही तुम कबूल करोगे । उदाहरण देता हूं । मेरे एक दोस्त श्री मंगल सैन का लड़का बसराबगदाद में रहता था वहां एक मकान के बारे प्रसिद्ध था कि इसमें कोई भूत रहता है । उसको कोई किराया पर नहीं लेता था । मंगल सैन का परिवार राधास्वामीमत का पैरोकार है । लड़के ने सोचा कि हमको भूत कुछ नहीं कह सकता इसलिए उस मकान को थोड़ा किराया देकर लेलिया लेकिन उसकी स्त्री के दिल में भूत का डर जरूर था । वह मेरा ध्यान करने बैठ गई । मेरा रुप प्रकट हुआ और कहा कि मेरी स्त्री मर गई है । स्त्री ने अपने पती को वताया । उसने अपने पिता मंगलसैन को लिखा और मंगलसैन ने मुझे यह घटना लिखी मैंने उसे उत्तर दिया कि फलां तारीख को मेरी स्त्री चोला छोड़ गई है । अब में अपने आपसे पूछता हूं कि क्या तू उसके अन्तर गया था और तुमने कहा था कि मेरी स्त्री मर गई है ? नहीं ! न मैं गया और न मुझे कोई पता है ।

उसके विचार की धार मुझ पर आई क्योंकि मेरे दिल में यह था कि मेरी स्त्री मर गई है इसलिए मेरी Radiation से उसको यही मिला । इसवास्ते में कहता हूं कि जो कुछ गुरु के अन्तर में है वही तुमको मिलेगा । जो गुरु सचाई वर्णन नहीं करते उनकी Radiation भी वैसी ही होगी और उसका असर तुम पर पड़ेगा । इसलिए ऐसे गुरुओं से तुमको सचाई नहीं मिल सकती । सन्तों के मार्ग में कहा गया है ।

गुरु को मानुष जानते सो नर कहिए अन्ध ।
दुखी होये संसार में आगे जम का फन्द ।

गुरु को कभी हज़ूर बाबा सावनसिंह जी महाराज या बाबा फकीर मत समझो । गुरु तो आयडियल है। उसको पूर्ण मानो । गुरु चाहे दस नं० का बदमाश ही क्यों न हो लेकिन अगर तुमने उसको पूर्ण माना हुआ है तो तुम्हारा परिणाम अच्छा होगा । मैंने अमरीका में भी यही कहा । वे लोग मेरा ध्यान करते हैं और उनकी मनोकामनायें पूरी हो जाती हैं । यह आवश्यक नहीं कि गुरु ही मानो, तुम उसको सतपुरुष मानो, भाई मानो, दोस्त मानो, मतलब तो उससे प्यार और प्रेम करने से है । अगर मेरा ध्यान करने

से तुमको शान्ति नहीं मिलती तो इसमें मैं दोषी हूं शर्त यह है कि तुम मेरे पास शान्ति के लिए आओ। लेकिन तुम लोग तो संसारी इच्छाओं के लिए आते हो। मगर नियमानुसार ये भी पूरी होनो चाहिएं। इसका नियम क्या है ? लकड़ी जलकर जब कोयला बन जाती है तो वह भी वही काम करती है जो आग करती है।

मैं इस संसार में सन्तमत की शिक्षा को साफ करने और संचाई बताने के लिए आया हूं जिसकी इच्छा हो मेरे पास आये जिसकी इच्छा न हो वह न आये। मैं नियम की बात कहता हूं। अगर सच पूछो तो जिन गुरुओं ने परदा रखा और सचाई वर्णन नहीं की और लोगों को अज्ञान में रखकर उनसे मानप्रतिष्ठा और धन धान्य लिया मैं उनकी गलतियों को साफ करके उनका कल्याण कर रहा हूं ताकि यदि ग़लतियों के कारण उनको कोई सज़ा मिली हुई हो तो वे इस सज़ा से छूट जाये। अब ज़माना बदल गया।

गुरु ने चोला बदलया सिदक न हारे सिख।

गुरु का चोला बदलना क्या है ? वर्णन शैली को बदलना। गुरु नाम है समझ, विवेक और ज्ञान का। मैंने समयानुसार वर्णनशैली बदल दी है। पहले जो इशारे थे और शब्द थे जिनके कारण बात को परदे में रखा गया था मैंने उनको बदल दिया है। अमरीका में मैंने कहा कि हज़रत ईसा मसीह ने कहा है कि मैं Light (प्रकाश) हूं और तुम भी प्रकाश हो, बाइबल में लिखा है कि अगर कोई आदमी वहां जाना चाहता है जहां से हज़रत ईसा मसीह आया है तो उस को प्रकाश का साधन करना चाहिए। रोशनी का साधन ही गायत्री मंत्र है। नूर का ज़िकर मुसलमानों मैं भी है। संतों के मार्ग में भी प्रकाश और शब्द का साधन है। सब धर्म प्रकाश और नूर को मानते हैं। हज़रत ईसामसीह ने कहा है "word was with God and God was with word" (आवाज खुदा के साथ थी और खुदा अवाज़ के साथ था) हिन्दुओं में भी पार ब्रह्म और शब्द ब्रह्म का ज़िकर है। इसलिए खुदा के मिलने का अगर कोई रास्ता है या सच्चे खुदा से वसाल का अगर कोई उपाय है तो केवल अपने अन्तर प्रकाश और शब्द को

प्रकट करना है। मेरी समझ में नहीं आता कि हिन्दु मुसलमान, ईसाई या और धर्म जो नूर को मानते हैं उन में मत भेद क्यों है। अपने अनुभव के आधार पर कहना चाहता हूं कि ईसाई बेशक गिरजा घर को पूजे या Slab को मत्था टेकते रहें, हिन्दु बेशक मूर्ति के आगे मत्था रगड़ते रहें और मन्दिर बनाते रहें और मुसलमान बेशक मसजिद में बांग देते रहें ओर नमाज़ पढ़ते रहें, वसाले खुदा नहीं हो सकता और यही बात मैं भारत वर्ष में भी भिन्न भिन्न धर्म पंथ वालों से कहना चाहता हूं कि मन्दिरों, मसीजदों, गुरू द्वारों, और डेरों में खुदा नहीं है। वह नूर, प्रकाश और शब्द स्वरूप है। इसलिये अपने अन्तर में चलो और प्रकाश और शब्द को पकड़ो।

अब भारत वासियों को एक और बात कहना चाहता हूं कि लाख तुम शब्द योग का अभ्यास करो और लाख अपने अन्तर प्रकाश को देखो, तुम्हारा आवागवन से छुटकारा नहीं होगा, हां, प्रकाश और शब्द के साधन से तुमको जो अनुभव होगा अगर वह अनुभव तुम्हारे दिमाग़ में बैठ जाये तब आवागवन से

तुम्हारा छुटकारा हो जायगा वरना प्रकाश और शब्द में जाने के बाद तुम्हारी सुरत को प्रकाश और शब्द के मंडलों में रहना पड़ेगा। वहां सुख है, आनन्द है और शान्ति हैं। यह ठीक है मगर फिर जब Evolution होगा तो तुम्हारी सुरत को फिर वापिस आना पड़ेगा जैसे राम और कृष्ण का जब अवतार हुआ तो जो रूहें ब्रह्म लोक या विष्णु लोक में थीं वह इन के साथ कोई गोपी बनके आई, कोई गोप बनके आया ओई हनुमान या बानर बन के आया। रामायण में या भागवत में ऐसा लिखा है। मैं दावा तो नहीं करता मगर अनुभव मानता है कि ऊपर के मंडलों से रूहें निचले लोकों में आकर काम कर जाती हैं। उन में से एक मैं हूं जो सृष्टि के क्रम के अनुसार इस सच्चाई को खोलने के लिये इस फकीर के चोले में आया हूं। यह बड़े २ संत, स्वामी जी या संत कबीर साहिब यह सब वहीं से आते हैं और जो मुक्त हो जाते हैं उनके लिये आना जाना नहीं है। मुझे खुद पता नहीं कि मेरा अंजाम क्या होगा।

संतमत में यह कहा जाता है कि स्वामी जी महाराज या कबीर साहिब सतलोक से आते हैं।

अगर यह स्वत: संत सत्लोक से आते हैं तो फिर इनका आवागवन कैसे खतम हुआ क्योंकि सतलोक में तो हस्ती मौजूद रहती है। आवागवन तो अगम और अनामी में जाके खतम होता है। तभी तो स्वामी जी महाराज या गुरु नानक साहिब या कबीर साहिब सतलोक से आये।

मैं ने यहां Free Eye Hospital खोला है जिस का खंच बहुत ज्यादा है, शाय़द न चल सके। यहां ट्रस्ट है जो रूपया यहां आता है उस में से कुछ बचाना पड़ता है और वाकी खर्च करना पड़ता है इस लिये यह हस्पताल खोला है। इस लिए अगर कोई भाई बहन इस में मदद करना चाहते है तो हम उनके बहुत अभारी होंगे। अगर न चल सका तो हस्पताल को बेशक बन्द करना पड़े लेकिन किताबों का प्रकाशन बन्द नहीं किया जायेगा।

सब को राधास्बामी

सत्संग हुज़ूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

दिनांक १० जुलाई १९७६

सुनो मेरी बिनती गुरु दाता ।
तुम तो आये जीव उबारन, दया क्षमा के काजा ।
जो नहीं मेरा काम बनाओ, नाम को आवे लाजा ।
मो सम दुष्ट नहीं कोई दूजा, दम्भी मानी गुमानी ।
दुखी जानकर चरन लगाओ, प्रेम भक्ति दे दानी ।
दुख कलेश ने चहुं दिस घेरा, मुझसा दुखी न कोई ।
मुझे तार लो जब मैं जानू, पतित अधम गति सोई ।
भलों को तुम नहीं तारन आये, तुम्हें बुरे है प्यारे ।
इनकी लाज तुम्हारे हाथ है, तुम इनके रखवारे ।
राधास्वामी दीन दयाला, दीनन के हितकारी ।
बांह गहो दुख मेटो काटो, काल का बन्धन भारी ।

राधास्वामी । आप गुरु पूर्णमा के सिलसिले में आये हैं । यह आपने भी सुना और मैंने भी । मेरा अपना जीवन मेरे सामने है । मैंने छोटी आयु में

कुछ गलतियां खाई उदाहरण के रूप में, छः महीने मांस खाया, तीन बार शराब पी और एक बार वैश्या के पास गया। इसके सिवाय यदि कोई पाप मैंने किया होगा तो वह मुझे याद नहीं। ये पाप मैंने किये। इनके कारण मेरा मन दुखी रहता था। इसलिए मैं राम को मिलने निकला था ताकि मेरे ये पाप धुल जायें। इस सिलसिले में मौज मुझे हज़ूर दाता दयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के चरणों में ले गई और उन्होंने यह गुरुमत मेरे हवाले किया उन्होंने मेरे जिम्मे कर्तव्य लगाया था कि फकीर! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। सन्तमत की बाणियां मैंने पढ़ीं इनमें जो सबका खण्डन किया हुआ है उसको मेरी आत्मा सहन नहीं करती थी और साथ ही हज़ूर दाता दयाल जी महाराज से मेरा विश्वास भी नहीं टूटता था। इसलिए मैं उनको छोड़ नहीं सकता था। उस समय मैंने प्रण किया था कि मैं सच्चा होकर इस मार्ग पर चलूंगा और गुरुमत से जो कुछ मुझे मिलेगा वह संसार को बता जाऊंगा अब मैंने यह शब्द सुना। यह जो जीव पुकार करता है और उसके अन्तर जो तड़प है और यह जीव जो

अपने अन्तर में निर्बलता महसूस करता है क्या यह निर्बलता दूर हो सकती है ? यह मेरे अन्तर में एक प्रश्न है जो मैं अपने ही आपसे पूछता हूं ।

सुनो मेरी विनती गुरु दाता ।
तुम तो आये जीव उबारन, दया क्षमा के काजा ।
जो नहीं मेरा काम बनाओ, नाम को आवे लाजा ।

अपनी आत्मा से कहता हूं कि ऐ फकीर ! तूने अपने अहंकार में आकर या गुरु आज्ञा वश और या अपना कर्म भोगने के लिए इस संसार में अपने आपको समय का सन्त सत्गुरु कहकर प्रकट किया है। अब तू बता कि ऐसे जीवों को जो इस प्रकार के भाव रखते हैं क्या तू उभार सकता है ? ऐ मेरी आत्मा ! तू सोच । मैं इन जीवों को ऐसे उभार सकता हूं जैसे मैं स्वयं इस प्रकार के भाव रखने वाला था । मैं प्रार्थना किया करता था और अब भी करता हूं । अव भी जब गुरु ज्ञान को भूल जाता हूं तो दुखी हो जाता हूं। वह गुरु ज्ञान क्या है ? हो सकता है जो गुरु ज्ञान मैंने समझा है वह गलत हो। मुझे किसी बात का कोई दावा नहीं है ।

मैं अमरीका गया। अढ़ाई महीने के बाद यहां वापिस आया पता लगा कि मेरे मित्र श्री मंगल सैन, जो कुछ साल पहले चोला छोड़ गये थे, की स्त्री का देहान्त हो गया। सन्त सेवासिंह दिल्ली वाले मेरे बड़े प्रेमी थे, वह चोला छोड़ गये। ठाकुर शंकरसिंह जी सेक्रेट्री राधास्वामी सत्संग हनमकोण्डा भी पूरे हो गये और श्री देवी चरण मित्तल सम्पादक "मनुष्य बनो" भी इस संसार से चल बसे। मैं जब अमरीका से दिल्ली आया तो मुझे देवी चरण मितल के लड़के ने बताया कि मरने से बारह दिन पहले वह मेरे फोटो को देखते रहते और प्रार्थना किया करते थे। आखरी दो दिन जब उनकी ज़बान भी बन्द हो गई थी फिर भी वह अन्तिम समय तक फोटो को देखते रहे। मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि जब वह मेरी फोटो को देखता था और प्रार्थना करता था और या जब वह मर गया तो क्या तुमको अमरीका में पता था कि वह तेरी फोटो को देखता है और प्रार्थना करता है और क्या तुमको पता था कि वह मर गया है ? नहीं। ऐसे ही कई और आदमी हैं जो यह कहते हैं कि वे

मेरा ध्यान करते हैं और मुझे याद करते है और मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट होता है और उनके काम कर जाता है लेकिन मुझे कोई पता नहीं होता। इस एक बात ने मुझपर गुरुमत की बड़ाई प्रकट की।

सुनो मेरी बिनती गुरु दाता।
तुम तो आये जीव उबारन. दया क्षमा के काजा।
जो नहीं मेरा काम बनाओ. नाम को आवे लाजा।

मैंने अपने आपको सन्त सत्गुरु कहा है। सोचता हूं कि क्या तुम किसी को उभार सकते हो? यदि उभार सकते हो तो कैसे? उभरना क्या है? एक आदमी किसी विचार में डूबा हुआ है या किसी विचार के साथ बन्धा हुआ है उसको उसकी असलियत बताकर उस विचार से जुदा कर देना उभारना है। सब लोग अपने मन के चक्कर में फंसे हुये हैं। मन से ही दुखी होते हैं, मन से ही सुखी होते हैं। मन से ही हाय हाय करते हैं और मन से ही आज़ाद होते हैं। श्री देवी चरण मितल मर गया। वह मुझे याद करता था। लेकिन मुझे कोई पता नहीं। सम्भव है उसको शान्ति मिलती हो लेकिन मुझे कोई पता नहीं कि वह कहां गया। मैंने यह काम क्यों किया? इस

समय गुरुमत या राधास्वामीमत में गुरु लोग यह विचार देते हैं कि नाम ले लो, तुम्हारे अन्त समय पर गुरु आयेगा और तुमको सतलोक ले जायेगा। यह एक ऐसा धोका है और फरेब है कि जीव विचारे इस धोके में आकर लूटे जा रहे हैं। गुरु नाम है समझ विवेक और ज्ञान का। आप लोग गुरु पूर्णमा पर आये हैं। मैं हूं समय का सन्त सतगुरु। अपना कर्तव्य पूरा कर जाना चाहता हूं, तुम्हारी समझ में बात आये या न आये मैं इसकी परवाह नहीं करता। जो कुछ भी अच्छा या बुरा विचार या संकल्प किसी के अन्तर फुरता है वह तो उसके मस्तिष्क पर पड़ा हुआ संस्कार है और उस आदमी की सुरत उसमें फंस जाती है। इसलिए गुरु वह है जो आदमी की सुरत को मन के चक्कर से निकाल दे। जब तक कोई आदमी मन के चक्कर में है वह दुख सुख हर्ष ओर शोक से बच नहीं सकता। मैं अपनी आत्मा को साफ रखकर इस संसार से जाना चाहता हूं ताकि मेरी आत्मा पर धोके या फरेब का बोझ न रहे।

मो सम दुष्ट नहीं कोई दूजा, दम्भी मानी गुमानी।

यह दुष्टपना मन का काम है। मौज मुझे सन्त-मत में ले आई जहां सबका खण्डन है। यह भी नहीं पहुंचा, वह भी नहीं पहुंचा और ससार को पैदा करने वाला ज़ालम है। मैं राम और कृष्ण को मानने वाला था। इस मत की समझ नहीं आती थी। तो हज़ूर दाता दयाल जी महाराज को तंग किया करता था कि मुझे वह बात बताओ जो तुम्हारे मत में है। अब सच्चाई यह है कि जब तक कोई मन में है वह लाख यत्न करे वह नेकी बदी, पाप पुन्य और दुख सुख से बच नहीं सकता क्योंकि मन का काम ही यही है। तो मन से परे जाने के लिए नाम है। कोई राधास्वामी नाम जपता है, कोई पांच नाम जपता है, कोई राम नाम जपता है, कोई बाहगुरु नाम जपता है और कोई अल्लाहू जपता है। जब तक कोई जपता है वह नाम से दूर है। इसलिए यह असली नाम नहीं है। असली नाम क्या है ?

नाम रहें चौथे पद माहीं, ये ढूड़ें तरलोकी माहीं।

शरीर मन और प्रकाश से परे नाम है। हम लोग आपिस में नाम की असलियत को न समझ कर लड़ कर मर गये। कोई कहता है राधास्वामी नाम

बड़ा है और कोई कहता है कि सतनाम बड़ा है। न कोई बड़ा है और न कोई छोटा है। नाम तो एक अवस्था है। उसमें बड़ाई और छुटाई कैसी ? जब तक कोई आदमी मन से ऊपर नहीं जाता वह नाम में नहीं जा सकता। मैं मन से नहीं निकल सकता था। केवल इस एक विचार से कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है, दवाईयां बता जाता है, पुत्र दे जाता है और कई चमत्कार कर जाता है। लेकिन मैं नहीं होता तो मुझे समझ आ गई कि ये जो रूपरंग अन्तर में प्रकट होते हैं ये केवल मस्तिष्क पर पड़े हुये संस्कार हैं और इनकी असलियत कुछ नहीं तो मैं मन को छोड़कर आगे जाने के लिए विवश हो गया। अमरीका में भी बहुत से लोग मेरा ध्यान करते हैं। उनके काम हो जाते हैं लेकिन मुझे कोई पता नहीं। क्योंकि मेरा कर्तव्य है इसलिए मैं यह काम करता हूं। अब ९० साल की आयु है लेकिन गुरु आज्ञावश इस आयु में भी देश विदेश धक्के खाता हूं। मौज। कल गुरु पूर्णमा है। गुरु की पूजा धन देना नहीं है। यह लेना देना तो संसार का व्यवहार है। यदि रुपये देने से यह वस्तु मिल जाती

तो बड़े २ सेठ सब पार हो जाते। लेने देने का सम्वन्ध मन से है। जो दिया हुआ है वह मिलता है। मैं लेने देने के विरुद्ध नहीं लेकिन इस से यदि तुम यह चाहो कि सदा के लिए चक्कर से निकल जाओ तो यह असम्भव है।

आप लोग आये हैं। मैं हूं समय का सन्त सत्गुरु और अपना कर्तव्य पूरा कर जाना चाहता हूं। कहना चाहता हूं कि ऐ मानव! तू मन के चक्कर से निकल। मैं भी जब गुरु ज्ञान को भूल जाता हूं तो मन के चक्कर में आ जाता हूं लेकिन फिर सम्भल जाता हूं। तो फिर गुरु क्या करता है? गुरु नाम देता है। इन गुरुओं ने लोगों को यह विचार दिया हुआ है कि नाम लेलो तुम्हारे अन्त समय पर तुमको गुरु ले जायेगा। यह विल्कुल धोका है। मैं किसी को नाम नहीं देता। मेरा नाम तो चौथे पद का है और उसको वह लेगा जिसका समय आ गया है। अब मैं ("क, ख ग") नहीं पढ़ा सकता। मैंने नाम से क्या लेना है। मैं तो वह नाम देता हूं जिससे आदमी मन के चक्कर से निकल जाये।

राधास्वामी दीन दयाला. दीनन के हितकारी।
बांह गहो दुख मेटो काटो, काल का बन्धन भारी।

वह कौन सा दुख है जिसको गुरु ने काटना है। मैंने इन सन्तों और गुरुओं के जीवन के हालात पढ़े और देखे। सिवाय कुछ एक के सबने बीमारियों से घोर कष्ट उठाया और कुछ एक का तो अपमान भी हुआ। तो फिर गुरुमत क्या है ? मैं नाक कटों में शामिल नहीं हुआ। मैं क्रियात्मिक रूप से हर एक वस्तु को देखना चाहता हूं। एक गुरु महाराज ने अपने ग्रन्थ में लिख तो दिया कि प्रभु का सुमरिन करने से वैरी भी वैर भाव को छोड़ जाता है मगर उनके भाई ने उनके साथ जीते जी वैर भाव रखा यदि प्रभु सुमिरन से ऐसा होता है तो उनके भाई ने उनके साथ शत्रुता क्यों की ? तो इससे यह भ्रम पैदा होता है कि या तो उन्होने प्रभु सुमिरन नहीं किया और यदि किया है तो प्रभु सुमरिन के बारे जो कुछ उन्होंने लिखा है वह ग़लत है। मैं चाहता हूं कि मेरा यह भ्रम दूर हो।

श्रीमद भागवत कहती है कि अर्जुन नर्क में गया और महाराजा युधिष्टर को भी 2½ घड़ी का नर्क

मिला। अर्जुन ने गीता के अठारह अध्याय श्रीकृष्ण जी के मुखारबिन्द से सुने थे। यदि अर्जुन श्री कृष्ण जी के मुख से गीता के अठारह अध्याय सुनकर फिर भी नर्क में जाता है तो फिर हम लोग किधर जायेंगे ? मैं किसी का खण्डन नहीं करता और न ही नुकताचीनी करता हूं। मैं भ्रम में हूं और चाहता हूं कि मेरा भ्रम दूर हो। मैं कहता हूं कि ऐ मानव ! तेरा बेड़ा न गीता ने पार करना है और न सुखमनी साहिब ने पार करना है। तेरा बेड़ा तेरे अपने अमल ने पार करना है। रामचरितमानस के लिखने वाला सन्त तुलसी दास अन्तिम आयु में तीन साल सख्त बीमार रहा। काफी कष्ट उठाने के बाद चोला छूटा। तुलसी दास ने रामायण में लिखा है।

चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीर।
तुलसी दास चन्दन घिसें तिलक देत रघवीर।

रामायण कहती है कि तुलसी दास को रामचन्द्र जी के दर्शन होते थे तो यदि राम के दर्शन होते थे तो उसके दुख क्यों दूर न हुये ? हजूर दाता दयाल जी महाराज ने आज्ञा दी थी कि "फकीर ! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को वदल जाना"। मेरी समझ

में यह आया है कि ऐ मानव ! तू इस भरोसे पर मत रह कि तेरा गुरु हज़ूर बाबा सावनसिंह जी महाराज है या बाबा फकीर है और या कोई और गुरु है और वह तुमको सतलोक पहुंचा देगा । तू अपने अमल, अपने कर्म और अपनी नीयत को ठीक कर और किसी से धोका फरेब मत कर वरना तुम आवागवन के इस चक्कर से निकल नहीं सकोगे और अपने कर्म के फल से बच नहीं सकोगे । आप लोग आये हैं मैं सोचता हूं कि आपलोगों को मैं क्या दूं । मैंने जीवन में जो समझा और अनुभव किया वह आप लोगों को आपकी भलाई के लिए कह रहा हूं । शत प्रति शत तो मैं भी बरी नहीं हूं । यह मन बहुत चंचल है और बहुत बेईमान है । मगर मैं यत्न करता रहता हूं ।

सुनो मेरी बिनती गुरु दाता ।
तुम तो आये जीव उवारन, दया क्षमा के काजा ।
जो नहीं मेरा काम बनाओ, नाम को आवे लाजा ।

काम तो तभी बनेगा यदि तुम गुरु आज्ञा में रहोगे । यदि तुम आज्ञा नहीं मानते तो काम कैसे बनेगा । गुरु की सेवा क्या है ? गुरु की आज्ञा मानना और उस पर अमल करना । गुरु को रुपये देना या कपड़े

देना यह तो संसार ० वहार है, जो दोगे वह मिलेगा। इससे मैं भी बरी नहीं हूं। मैं अमरीका गया। लोग मुझे वहां रुपये देते थे और मैं रोता था। क्यों? जिस वस्तु से कोई आदमी घृणा करता है वही वस्तु उसके गले का हार हो जाती है। मैं वह आदमी हूं कि जिसने बाप के घर से रोटी नहीं खाई कि बाप रिश्वत खाते हैं और आज बाहर दौरे पर जाता हूं तो लोगों के घर में रोटी खाता हूं। जिनके घर में टुकड़ा खाता हूं क्या यह सब रिश्वत से बरी हैं या क्या इन सबकी कमाई नेक है? अमरीका गया, वहां जो लोग गाय का मांस खाते हैं उनके घर भी टकुड़ा खाके आया हूं। तो मेरे अनुभव ने यह सिद्ध कर दिया कि जिस वस्तु से कोई घृणा करता है वह उसका शकार हो जाता है। इसलिए किसी से घृणा मत करो।

मो सम दुष्ट नहीं कोई दूजा, दम्भी, मानी. गुमानी।
दुखी जानकर चरण लगाओ, प्रेम भक्ति दे दानी।

जब मैं बाप के घर से खाना नहीं खाता था तो क्या मैं अभिमानी और दम्भी नहीं था? मेरी वह अज्ञान की भक्ति थी। मैं समझता था कि में नेक

कमाई खाता हूं और मैं नेक हूं। वह मेरा धार्मिक जनून का अभिमान था और मेरी भूल थी।

दुख कलेश ने चहुं दिस घेरा, मुझसा दुखी न कोई।
मुझे तार लो जब मैं जानूं, पतित अधम गति सोई।

मैं भी पतित था। अपने आपसे पूछता हूं कि क्या हजूर दाता दयाल जी महाराज ने तुमको तार दिया? हां! तार दिया। कैसे? उन्होंने मुझे यह समझ और ज्ञान दिया कि फकीर! यह सारा खेल तेरे ही मन का है। अब मुझे विश्वास हो गया, क्योंकि जब मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है और कई प्रकार के चमत्कार कर जाता है और मैं नहीं होता तो मुझे यह विश्वास होना चाहिए कि यह सब मन का खेल है। पहले जो मेरे अन्तर विचार या रंग रुप आते थे मैं उनको सत मानता था लेकिन अब नहीं मानता। तो मैं तो ऐसे तरा। क्योंकि मेरे जिम्मे कर्तव्य है इसलिए मैं वही शिक्षा तुमको देता हूं। जब यह समझ आ जाती है तो आदमी मन के चक्कर से निकल जाता है। यह है ज्ञान की आंख। ज्ञान यह है कि में न शरीर हूं न मन हूं, न प्रकाश हूं और न शब्द हूं। मैं इन सबसे जुदा हूं। मगर जब यह ज्ञान

भूल जाता हूं तो मैं भी फंस जाता हूं। तो भई ! मुझे तो यह मिला।

डाक्टर रामजी लाल ! तुम आये हो। सेवा करते हो, मंदिर की आर्थिक सहायता करते हो। मेंने जीवन में जो स्वयं अनुभव किया वह कहता हूं दूसरों का उदाहरण नहीं देता। हो सकता है मैंने जो ससझा है वह ग़लत हो। मुझे किसी बात का कोई दावा नहीं है। इस समय के गुरुओं ने हमको धोका में रखा। जो भी उठता है वह हम गृहस्थियों को अपने जाल में फंसाने का यत्न करता है। जो कुछ मैंने समझा है यदि यह ठीक है तों दूसरे महात्मा जिन्होंने अपने धन धान्य और मान प्रतिष्ठा के लिए परदा रखा और सचाई वर्णन नहीं की तो आप लोग तो कहोगे कि वे सतलोक गये लेकिन मैं कहूंगा कि यदि कोई नर्क है तो वह उनके लिए है। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने भी किताबों में तो लिख दिया और सैन बैन में बहुत कुछ कहा मगर ज़बानी उन्होंने भी बात को खोला नहीं जिस प्रकार कि मैंने खोला है। सन्तों के जीवन के हालात देखकर मैं डर गया। इसलिए मैं स्पष्ट वर्णन करता हूं। तुम्हारी इच्छा करे आओ न चाहे

मत आओ। मेरी किताब पढ़ो या न पढ़ो। मंदिर के लिए चार पैसे दो या न दो तुम्हारी इच्छा। मैं इस बात की चिन्ता नहीं करता।

यह मंज़ल बहुत कठिन है। आपलोगों को क्या करना चाहिए? आपलोगों के लिए वेद मार्ग है। मानव के विचार में बहुत शक्ति है। इस संसार में रहते हुये शिव संकल्प रखो। अपना और अपने परिवार का भला चाहो। सन्तमत केवल उनके लिए है जिनको संसार का अनुभव हो चुका है कि यहां सुख नहीं है उनके लिए सन्तों का मार्ग है। गृहिस्थयों के लिए यह है कि नेक बनों, अपने बक्चों का ध्यान रखो, अपने विचार शुद्ध रखो, द्वेष को छोड़ो और संतान अच्छी पैदा करो। यह मैंने आप लोगों को नहीं कहा यह सब अपने ही आपको कहा है। अब मेरी आत्मा पर कोई बोझ नहीं। मेरा तो जीवन केवल एक विचार से बदला कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। मेरी आंख खुल गई। मैं शुभ भावना देता हूं जो इसको ग्रहन कर लेते हैं उनको लाभ हो जाता है। Law of Radiation काम करता है। ध्यान शक्ति में बहुत शक्ति है। पिछली बार मैं अमरीका गया तो

एक स्त्री पुरुष का जोड़ा मेरे पास आया। वे अमरीका के रहने वाले हैं। गरीब थे। मैंने उनसे कहा कि मेरा ध्यान किया करो तुम्हारी इच्छा पूरी होती रहेगी। अब की बार मैं अमरीका गया तो वह फिर मेरे पास आये। अब के वह बहुत धनी थे। मुझे क्योंकि कुछ कम सुनाई देता है वह स्त्री एक डाक्टर को बलाकर लाई। उस डाक्टर ने मेरे कान Test किये और मुझे Hearing Aid अर्थात एक मशीन दे गया जिसका मुल्य 645/- डालर है। उस स्त्री ने कहा कि इसका मुल्य हम देंगे। मेरे पास तो इतना पैसा है नहीं और न ही मैं दे सकता था। लेकिन मेरे मन पर इस Hearing Aid का बोझ रहा। दिल्ली वापिस आया तो पता लगा कि यहां Hearing Aid का मूल्य लगभग 500/- रुपये है। यहां होशियारपुर आकर मैंने 500/- रुपये मंदिर में दे दिये। अब मेरी आत्मा पर इसका कोई बोझ नहीं है।

अब आप सोचो कि वह जो गरीब पति पत्नि मेरे पास आये, पहले बहुत गरीब थे और अब अमीर हो गये। उनको किस ने दिया ? ध्यान शक्ति ने। इसलिए मैं कहता हूं कि जहां भी तुम्हारा विश्वास है

उसका ध्यान किया करो। ध्यान से तुम्हारी Will Power बढ़ जायेगी और तुम्हारी मनोकामनायें पूरी होती रहेंगी जो चाहोगे मिल जायेगा। कई आदमी आके कहते हैं कि बाबा जी ! ध्यान नहीं बनता तो मैं कहता हूं कि फिर मैं क्या करूं। मैं तो तुम्हारे अन्तर आने से रहा। हज़ारों लोग मेरा ध्यान करते हैं और उनके काम होते रहते हैं। यदि मैं सच्चाई वर्णन नहीं करता तो यह जो मैं तुम्हारा टुकड़ा खाता हूं। यह मुझे खा जायेगा। मैंने सन्तों के हाल देखे। कांप उठा कि पता नहीं मैं कैसे मरूंगा। मेरे पास शुभ भावना है। सच्चे दिल से चाहता हूं कि मालिक करे सबसे पहले तुमको स्वस्थ्य मिले, भोजन मिले, कपड़ा और मकान मिले और मन को शान्ति मिले। रब मिले या न मिले। रब तो पहले हर जगह मौजूद है। मेरा केवल भ्रम था। भ्रम दूर हो गया। अब किसीको ढूंडने जाऊं ? तुमलोग आये हो। मैं अपनी जिम्मेदारी को महसूस करता हूं। सच्चे दिल से चाहता हूं कि आपलोगों को सुख मिले।

'सब को राधास्वामी'

गुरु रक्षा

सत्संग हुजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मन्दिर होशियारपुर ।

राधास्वामी । आज रक्षा बन्धन का त्योहार हैं । आप लोगों ने मुझें राखी बांधी और बाहर से भी बहुत राखिया आई । मेरे दिल में यह सवाल पैदा हुआ कि फकीर ! तूने यह मकड़ी का जाला बनाया है और यह क्या पाखण्ड बना रखा है । क्या तू किसी की रक्षा कर सकता हैं ? स्वामी जी ने लिखा है :-

गुरु रक्षा जाके संग नाहिं, ताको काल करम भरमाहिं ।

संत मत में गुरु की रक्षा क्या है जिस से काल और कर्म के भ्रम मिट जायें । काल नाम है समय का और कर्म कहते है गति को । समय २ पर जो परिवर्तन होता है चाहे वह शारीरिक, मानसिक और

सांसारिक हो, जिस पर गुरु की दया होती है वह इस परिवर्तन से न डोलता है और न घबराता है, यह है गुरु की रक्षा। दूसरी गुरु रक्षा यह है कि दुनियां चाहती है कि उनको धन मिल जाय, पुत्र हो जाये, बीमारी ठीक हो जाये या मुकद्दमा उनके हक में हो जाये। मेरा अनुभव यह है कि लोगों को जो कुछ मिलता है यह उनका अपना विश्वास होता है। मैं क्यों ऐसा कहता हूं? मेरे पास लोग आते हैं और कोई बात कहते हैं और मैं कह देता हूं? कि हो जायेगी, वह हो जाती है तो लोग समझते हैं कि बाबा जी ने यह हमारा काम कर दिया। लेकिन मैं कुछ नहीं करता। यह व्यक्यि का आपना कर्म और विश्वास होता है। हजूर दाता दयाल जी महाराज से मुझे आदेश दिया था कि फकीर! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैंने जो आप अनुभव किया है उसके अनुसार शिक्षा को बदले जा रहा हूं। पता नहीं मैंने ठीक किया है या ग़लत किया है। लेकिन मेरी नीयत बिलकुल साफ है।

आज राखी है। मैं सोचता हूं कि फकीर! यह लीग तुमको राखिमां बांध रहे हैं और बाहर से भी

बहुत से लोगों ने तुझे राखियां भेजी हैं। क्या तुम कुछ कर सकते हो ? मैं वह बात बता सकता हूं और वह ज्ञान दे सकता हूं जिस के समझ जाने से और उस पर अमल करने से व्यक्ति काल और कर्म के करज़े से दुःखी नहीं होगा। यह मैंने संतमत में आकर समझा है। मैं सोचता हूं कि इन सन्तों और गुरुओं पर भी दुःख और कष्ट आये। बीमार हुए। किसी का लड़का मर गा, किसी का लड़का नालायक हो गया, किसी के घर में झगड़ा रहा। अगर इन में कोई शक्ति थी तो यह अपने दुःख दूर कर लेते। और अगर इन के गुरुओं में कोई शक्ति थी तो इनकी रक्षा क्यों नहीं हुई ? इनके गुरु इनकी रक्षा करते। लेकिन न कर सके। तो क्या शिक्षा बदलूं ? जो कर्म तुमने किये हैं या तू करेगा, अगर तू यह चाहे कि दुनियां की कोई शक्ति तुमको इसके फल से बचा दे तो यह असम्भव है। मैं क्यों कहता हूं ? मेरे सत्गुरु हज़ूर दाता दयाल जी महाराज की धाम उजड़ गई लेकिन वह उसको न बचा सके। उनके गुरु हज़ूर राय सालिग राम जी महाराज थे, वह भी उन की धाम को बचा न सके। हज़ूर दाता दयाल जी

महाराज को तो मैं कह सकता हूं लेकिन दूसरों को अगर मैं कहूं तो वह नाराज़ होंगे। लेकिन सच्चाई यह है कि कोई गुरु भी कुछ नहीं कर सकता। यह सब जीव का अपना विश्वास और अपना कर्म है।

सच आखियां भांबड़ मचदा ए, झूठ आखियां ज्युड़ा जचदा ए।
रुक-रुक के जीबा केहदी ए, मुंह आई वात न रेहदी ए।

फिर गुरु की रक्षा क्या है? मैंने हजूर दाता दाता दयाल जी महाराज से बहुत प्रेम किया। उन्होंने मुझे आशीर्वाद दी और फरमाते है :-

फकीरा, जा भवसागार पारा,
जग है दुविधा जग दुचिताई, जग दूई व्वहारा।
सुख दुःख राग द्वष बिष अमृत, यह सब द्वन्द पसारा।

वह कहते हैं कि फकीर! भव सागर से पार हो जा। तूने गुरु से प्रेम किया। गुरु चेला तो जगत का व्यवहार है। जब अगम में चले जाओगे तो फिर न गुरु है और न चेला है। द्वन्द क्या है? दोपना। पहले मुझे द्वन्द का पता नहीं लगता था इसलिये मुझे यह काम दिया गया था। आप देखो, यह अमरीका देश की यह महला इतनी दूर से आई है। क्यों?

इस के अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है। और भी बहुत से लोगों के अन्तर मेरा रूप प्रकट होता है लेकिन मैं तो कहीं नहीं जाता और न ही मुझे कोई पता होता है। ऐसे ही जो कुछ भी हमारे अन्तर रंग रूप भाव विचार और संकल्प पैदा होते है वे वास्तव में हैं नहीं, कल्पित हैं और माया है। मगर हम उनको सत मान कर उन में फंस जाते हैं। जब से मुझे द्वन्द की समझ आई है तो अब में द्वन्द के कारण या काल और कर्म के चक्कर के कारण प्रभावित नहीं होता। मगर कर्म का फल तो ज़रूर भोगना पड़ता है। कर्म भोग को कोई बदल नहीं सकता। स्वामी जी महाराज के बारे हज़ूर महाराज जी ने बहुत कुछ लिखा, उन की बहुत सराहना की, लेकिन स्वामी जी महाराज अपनी अन्तिम आयु की दो साल की बीमारी को दूर न कर सके। हज़ूर महाराज जी ने स्वामी जी की तारीफ इस लिये नहीं की कि उन्होंने उन को किसी बीमारी से बचा दिया या उनके लड़के को बचा दिया या उनको संसार के सुख प्रधान किये बलकि इस लिए की है कि स्वामी जी महाराज ने हज़ूर महाराज को सच्चा मार्ग, सच्चा भेद और सच्चा रहस्य बताया

और शान्ति को प्राप्त करने के लिए उनकी सहायता की। हज़ूर महाराज जी का अपना ही विश्बास था। ज़ैसे मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट हो कर उनके काम कर जाता है और मैं नहीं होता और न ही मैं कुछ करता हूं। इसलिए मैं कहता हूं कि कोई गुरु भी कुछ नहीं करता। जीवों का अपना ही विश्वास काम करता है, बाहर के गुरु की केवल यह दया है कि वह जीव के द्वन्दपने को मिटा दे। जब उसको समझ आ जायेगी तो फिर वह बुरा काम नहीं करेगा और न ही काल और कर्म के चक्कर से प्रवावित होगा। पिछला कर्म तो भोगना ही पड़ेगा और भोगेगा। जब दुःख और सुख आयेगा तो बह यह समझेगा कि यह मेरा कर्म है, मैंने हो किया है और मैंने ही भोगना है। इस समझ से वह उसको महसूस नहीं करेगा।

सहज में जग का रूप लखाजं, सहित विवेक विचारा।
यह समझाय तोहि अपनाऊं, मेटू द्वन्द विकारा।

मुझे यह विवेक आता नहीं था। मुझे यह विवेक देने के लिए उन्होंने मुझे गुरु पदवी थी। अब तुम लोगों की दया से मुझे समझ आ गई। इसलिये अब

मैं फंसता नहीं। एक बाहर के जगत को तो सब जानते है मगर अन्तर के जगत की समझ आनी बहुत कठिन है, मुझे नहीं आती थी। इसलिए उन्होंने मुझे यह काम दिया था। मुझे गुरु बनने की लालसा नहीं है। गुरु नाम है ज्ञान का और अनुभव का। बाहर के गुरु की यहां दया है कि वह राज़ और भेद देता है। मगर लेता वह है जिस को आगे जाने की ज़रूरत होती है और इस संसार के दुःखों से बचने की इच्छा होती है। लेकिन आप को संतमत की शिक्षा से क्या अभिप्राय है। जबसे मुझे पता लगा कि मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है और उन के काम कर जाता है लेकिन मैं नहीं होता तो मुझे मन के रूप की समझ आ गई। अब मैं इन सत्संगियों को जिन के कारण मुझे यह ज्ञान हुआ सच्चा सत्गुरु समझ कर इन की सेवा करता हूं। आप लोग गुरु की दया यह समझते हैं कि गुरु ने तुमको पुत्र दे दिया या तुम्हारी बीमारी ठीक हो गई या यह हो गया या वह हो गया। दीवानो ! यह तो तुम्हारा

अपना कर्म है। अगर कर्म में नहीं है तो गुरु कुछ नहीं कर सकता।

दुनियां वालो! सुन लो, मैं ९० साल का हो गया। अपना अनुभव बता रहा हूं। सब कहते हैं कि पूरा गुरु तलाश करो। पूरा गुरु क्या करता है? सुनो, जब कोई व्यक्ति बीमार हो जाता है तो डाक्टर के पास जाता है। डाक्टर उस की बीमारी को दूर कर देता है। बीमार को फिर डाक्टर के पास जाने की ज़रूरत नहीं होती लेकिन वह डाक्टर का उपकार मानता है कि वह उस की दवाई से राज़ी हो गया है। ऐसे ही बाहर के गुरु का हाल है। वह जीव के भ्रम और वहम दूर करता है, जब यह दूर हो जाते हैं तो फिर गुरु की भी ज़रूरत नहीं रहती। मगर फिर भी जब तक उस का जीवन है वह गुरु का उपकार मानता है वह कृतधन नहीं होता। जिस तरह लड़के स्कूलों और कालजों में पड़ते हैं, जब वह पास हो कर स्कूल या कालेज से चले जाते हैं तो वह मास्टरों और प्रोफैसरों का खण्डन नहीं करते बलकि वह अपने बच्चों को स्कूल और कालजों

में पढ़ने के लिये भेजते हैं। ऐसे ही सच्चा शिष्य गुरु की प्रणाली कायम रखता है। गुरुमत से गुरु ज्ञान प्राप्त करने के बाद शान्ति और हार्दिक सुख मिलता है। मुझे गुरुमत से यह मिला।

जब लग प्रारब्ध है भाई, भोग काट दे सारा।
भोगें प्रारब्ध तब कुछ नाहिं, आगे अगम अपारा।

दाता फरमाते हैं कि प्रारब्ध कर्म तो भोगने पड़ेंगे और फिर जब तुम आगे चले जाओगे तो फिर न गुरु और न चेला। वहां जाने से अनुभव हो जाता है। जिन्होंने गुरु किया, चाहे किसी को भी किया, कर्म का फल सब को भोगना पड़ता है। इस से कोई बच नहीं सकता, न पीर न पैगम्बर न अवतार न गुरु इसलिये मैंने शिक्षा को बदल दिया है कि ऐ इन्सान ! अपनी अमली जिन्दगी को ठीक बना और अपनी नीयत को साफ रख और इस भ्रम में मत रह कि तू ने गुरु किया हुआ है और तुम बच जाओगे। यह बिलकुल गलत है। हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे आशीर्वाद दी थी और फरमाया था कि पिछले कर्म भुगत जायेंगे। मुझे अब समझ आ गई है कि जीवन क्या है।

लब खुले और बन्द हुए, यह राज़ जिन्दगानी है।

आज रक्षा बन्धन है। मैं रक्षा कर रहा हूं। रक्षा क्या है ? गुरु समझ देता है, भ्रम दूर करता है और जीने का राज़ बताता है। यह है गुरु रक्षा। जो कर्म किये हैं वह अवश्य भोगने पड़ेंगे। अगर ज्ञान हो जाये तो फिर कर्म को भोगते हुए दु:ख नहीं मनाओगे। मेरा एक लड़का मर गया और एक लड़की मर गई। मुझे क्योंकि ज्ञान था इसलिये मुझे कोई दुख नहीं हुआ बलकि मैंने खुशी मनाई। यह खुशी मुझे किसने दी ? समझ गुरु ने। तो मेरी रक्षा किस ने की ? गुरु ज्ञान ने। मैं गुरु के रूप में अपना कर्तव्य पूरा कर रहा हूं, गुरु नाम है समझ और ज्ञान का।

गीता राम ! रात को तुम मेरे पास आये और अपनी ग़लतियां ब्यान की। अब अपने कर्म का फल भोगो। रोते क्यों हो। जो किया है वह अवश्य भोगना पड़ेगा।

कट गई काल करम की फांसी जनम जुआ नहीं हारा।
राधास्वामी की बलिहारी, रहे फकीर सुखारा।

काल कर्म को फांसी मेरी कैसे कटी ? काल है समय और कर्म गति का नाम है। काल और कर्म

में जो कुछ हुआ उस का ज्ञान की दृष्टि से दुख न मानना। दुख आयेगा तो ज़रूर मगर उसको ज्ञान से काटो। काल और कर्म की फांसी ज्ञान से कटती है। मैं चाहता हूं कि मेरा यह भाषण पब्लिक में जाये। आप लोगों ने मुझे राखियां दी। मैं अपनी डियूटी को महसूस करता हूं। इसके बदले में तुमको ज्ञान देता हूं। अगर तुम इस को समझ जाओ और इस पर अमल करो तो जो दुःख तुम को आयेगा तुम ज्ञान की दृष्टि से उसको महसूस नहीं करोगे। कर्म में जो होता है वह होके रहता है। इसलिए अपनी नीयत को साफ रखो। अगर तुमको समझ आ जाये तो आगे के लिये तुम्हारे कर्म नहीं बनेंगे मगर पिछले ज़रूर भुगतने पड़ेंगे। जब मेरी विवहित लड़की मरी तो रास्ते में मुझे पौस्ट मैन ने चिट्ठी दी, मैंने पढ़ी और हज़ूर दाता दयाल जी महाराज का धन्यवाद किया। क्यों ? दामाद रोज़ तंग करता था कि घड़ी नहीं दी, साईकल नहीं दिया, यह नहीं दिया और वह नहीं दिया। इसलिये मैंने धन्यवाद किया। शुकर है कि आजकल जहेज़ के विरुद्ध पब्लिक में जागृति आ गई

है और जगह २ जहेज़ के विरुद्ध आवाज़ उठ रही है। मालिक करे सफलता मिले। गुरु का जो कर्तव्य है वह मैंने पूरा कर दिया। मैं पाखण्ड नहीं जानता।

'सब को राधास्वामी'

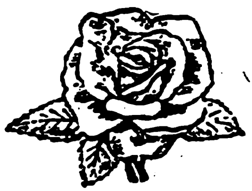

मुझे शरम आती है

कुदरत, मौज, मुझ को मालिक से मिलने के सिलसिले में एक दृष्य द्वारा हजूर दाता दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उस ज़ात पाक ने मुझ को वंश परम्परा के धर्म अर्थात पूजा पाठ से तबियत को हटा कर गुरुमत की तरफ लगाया। मैंने सारी आयु इस गुरुमत के राज़ को समझने में खो दी और जो राज़ मुझ को समझ में आया उससे मुझ को सन्तुष्टि, तस्कीन और परम शन्ति का अनुभव हुआ। अब मेरे जिम्मे क्योंकि दाता दयाल जी महाराज ने तालीम को बदलने और हज़ूर बाबा सावन सिंह जी महाराज ने निर्भय हो कर काम करने का आदेश दिया था इसलिये मैं यह काम करता हूं। सोचता हूं कि वर्तमान गुरुमत क्या है? स्वामी जी से अब कितनी गद्दियां हुई। दयाल बाग, स्वामीबाग के मुकद्मे हुऐ, ब्यास की गद्दी सावन आश्रम और ब्यास, दो भागों में बट गई। इसीं प्रकार

तरनतारन। अब संत कृपाल सिंह जी चले गये। उन के बाद हर देवी माता और संत दर्शन आये और भी छोटे २ डेरे निकलते हैं उन का क्या ज़िकर करूं ? मेरे पास सत्संगियों के पत्र आते हैं, एक ने लिखा कि संत कृपाल सिंह जी कह गये थे कि उनके बाद उन का कोई रिश्तेदार गद्दी पर नहीं आयेगा। यह Public Property है, ऐसे ही बाबा सावन सिंह जी महाराज ने स्पष्ट शब्दों में कहा था जो मैंने अपने कानों से सुने कि उनके बाद उनका कोई रिश्तेदार गद्दी पर नहीं आयेगा। मगर हुआ क्या ? दयालबाग में सहिब जी महाराज के बाद एक राज जी महाराज प्रकट हुये और अब महता साहिब के बाद गुरु का चुनाव हुआ। यह बातें देख कर मैं अपने आपको शरमसार महसूस करता हूं कि मैं ऐसे पंथ में शामिल हूं जहां सच्चाई हकीकत और असलियत बिलकुल खतम है। क्योंकि मेरे जिम्मे कर्तव्य है। इसलिये मैं कहता हूं कि ऐ भूले हुये इन्सान ! गुरु नाम समझ, ज्ञान और विश्वास का है। यह जितने रूप रंग गुरुओं के तुम्हारे अन्तर प्रकट होते रहते हैं यह सब काल मायामत के अन्तर हैं। इसके नतीजे की वजह से हम भोले भाले

इन्सान अज्ञान में आकर कि फलां गुरु अन्तर आया, फलां गुरु ने समाधि लगवा दी या सुरत चढ़ा दी, यह हुआ और वह हुआ, यह सब संतमत की तालीम नहीं है। यह मनमत है। यही काल और मायामत है जिस के बरखिलाफ स्वामी जी या कबीर साहिब ने आवाज़ दी और संतमत की बुनयाद रखी ताकि मानव जाति जो धार्मिक या पंथिक दृष्टिकोण से बटी हुई है, वह एक हो जाये। मगर यहां अब क्या हो रहा है ? दिल को दु:ख लगता है। कई बार जी चाहता है कि अगर कोई मुझ से पूछे कि तू किस मत का पैरोकार है तो मुझे वर्तमान गुरुमत वाला अपने आप को कहने में शरम आती है। क्योंकि मेरे जिम्मे डियूटी है इसलिए गुरुमत क्या है, गुरु कौन है, क्या है, उसकी क्या डियूटी है, वह क्या करता है और गुरुमत से क्या लाभ है, मैं इस विषय पर दुसहरे के सत्संग में दिल्ली में रोशनी डालूंगा। जो लोग सचमुच सच्चाई, असलियत, हकीकत और शान्ति के इच्छुक हैं वो आयें। मैं अपनी नीयत से किसी पंथ, किसी गद्दी के बिलकुल बरखिलाफ नहीं मैं सिर्फ सच्चा गुरुमत और वह क्या देता है और उस की दात का कौन अधिकारी है, इस पर रोशनी

डालूंगा वह भी इस लिए कि कुदरत ने मुझे पैदा ही इसीलिये किया है। मेरे नाम दाता का हुकम है :-

तेरा रूप है अद्भुत अचरज, तेरी उतम देही।
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल सनेही।
तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा।
दुखो जीव को अंग लगा कर, लेजा गुरु के देसा।
तीन ताप से जीव दुखी हैं, निबल, अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी।

मैं अपने बचनों द्वारा ही दुनियां को सत्यज्ञान या सतनाम देता हूं।

फकीर

पत्र व्यवहार द्वारा ज्ञान

पत्र नं० १

प्यारे रणजीत सिंह, राधास्वामी।

पत्र पढ़ा, सोचा, हंसी आई। आप ने लिखा है आप अभी मंज़िले मकसूद पर नहीं पहुंचे। मंजिलें मकसूद पर पहुंचे बगैर तुम जो किताब लिख रहे हो, इस का लोगों पर क्या असर होगा?

पंडित और मशालची, दोनों एक समान।
औरों को चांदन करें, आप अंधेरे मांह।

मेरी बात का बुरा न मानना दोस्त! कहते हैं "घर में दीवा जलाकर फिर मन्दिर में जलाओ" अगर सार वस्तु किताबों से मिलती होती तो दाता दयाल जी महाराज ने पांच हज़ार किताब लिखी। कितने उनके पढ़ने वाले मंजिले मकसूद पर पहुंचे? हां, मन का जज्बा है। आत्मा अपने आप को जैसी कि वह होती है, प्रकट करना चाहती है। किताबें लिखने से आपको अस्थाई शान्ति मिलेगी और कुछ पैसा भी

मिल जायेगा। अब मैं अपनी आत्मा से सवाल करता हूं क्यों फकीर चन्द ! तुम को मंजिले मकसूद मिल गई ? मंजिल का मुझे पता लग गया मगर वहां हमेशा ठहरा नहीं जाता और यह पता मुझको, दया तो दाता दयाल जी महाराज की है, मगर सत्संगियों से मिला केवल इस एक ख्याल से कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता, मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होता है, मुझे अपने आद घर, आद अवस्था में जाने का मौका मिलता रहता है। फिर सोचता हूं क्या मैं किसी की मदद कर सकता हूं। हां और नहीं। हां इसलिए कहता हूं कि जो आदमी सच्चाई का इच्छुक है, मान इज़्ज़त बड़ाई का ख्याल नहीं रखता, वह तो मेरी बात को समझ कर अगर चाहे तो मन के तबके को छोड़कर अपनी ज़ात का अनुभव कर सकता है। जिनको संसार के मान, इज़्ज़त की ज़रूरत है वे नहीं कर सकते।

तुमने लिखा तुम्हारा अभ्यास सहसदल कमल तक है। मैं कहता हूं कि सहसदल कमल, त्रिकुटी, सुन्न महासुन और भंवर गुफा यह सभी मन के तबके में हैं। आखरी मंजिल इन सब के त्याग में है।

तुमने लिखा कि तुमें संसार की कोई चिन्ता, नहीं, सुरखरू हो गये और मैं कहता हूं तेरा संसार अभी मौजूद है। संसार है सम् + सार। सार तुम्हारी ज़ात है। उस के सामने जो कुछ भी आता है, रूप रंग, विचार, प्रेम, योग, ध्यान, ज्ञान, सब ही संसार है। कबीर साहिब ने धर्मदास को कहा था।

चल हंसा सत्‌लोक हमारे, छोड़ो यह संसारा हो।
यह संसार काल है राजा, सब का करत अहारा हो।

धर्मदास तो अपनी सारी जायदाद देकर सब कुछ छोड़ कर कबीर के पास गया था। फिर कौन सा संसार कबीर उससे छुड़ाना चाहता था। उसके मन का संसार।

अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं तेरा संसार खतम हो गया ? यह खत लिखा रहा हूं, जवाब दे रहा हूं, यह मेरा संसार नहीं तो और क्या है ? तो मेरे अनुभव में क्या आया ? जब तक जिन्दगी है और मन है, न कोई संसार को छोड़ सकता है और न किसी ने छोड़ा है। केवल सत्संग करके बात को समझ कर अपने मन के संसार में रहकर मन के ख्यालात में न फंसना ही मंजिले मकसूद है। मुझे

यह समझ आई और इसी का नाम जीवन मुक्त अवस्था है। हर व्यक्ति को, संत हो, परम संत हो, अवतार हो अपने प्रारब्ध कर्मों का फल भोगना पड़ता है। समझ सकते हो तो समझो। नहीं समझ सकते हो मौज करो या कुछ दिन यहां मेरे पास आकर रहो। शायद मेरे जीवन की रहनी से तुम को सार अनुभव हो जाय।

शब्द योग मंजिले मकसूद नहीं है। मंजिले मकसूद जीवन मुक्त अवस्था है।

आपका फकीर

पत्र नं० २

ऐ प्यारे सच्चे इंसान ! राधास्वामी

खत पड़कर बहुत खुशी हुई। मेरा भी यही हाल है। मैं भी उस परम शक्ति को मानता हूं मगर मैं अब ऐसा समझता हूं कि मैं उस शक्ति में इस तरह से रहता हूं जिस तरह से मछली पानी में रहती है। ये हालत मुझे तजुर्बे ने सिखाई है।

तुम अगर सच्चे बनकर अपनी ज़ाती जिन्दगी के अनुभव के आधार पर चलोगे तो मंजिल पर पहुंच जाओगे। ऐसे ही मैं पहुंचा हूं। शांति भी इस तरह मिलेगी।

शान्ति का मिलना क्या है ? ? शांति का मिल जाना भ्रम शंकाओं का खतम हो जाना। अपनी ही समझ से ये खतम हो जाएं तो मुबारिक है। दूसरे के समझाने से आरज़ी तौर पर तस्कीन मिलेगी। वह पूरी नहीं होगी। विश्वास से भी थोड़ी तस्कीन मिलती है। मगर फिर गिरावट आएगी। इसलिए घट में खोजो, "घट में ढूंडो घट में पाओगे उसे"

अगर अकेले ढूंढने चलोगे तो परेशानी जरूर आयेगी। इसलिए अपनी खोज के नतीजे मुझे लिखते रहा करो। शायद मैं तुम्हें हिम्मत व हौसला दे सकूं।

आपका फकीर

मेरा कर्म

सहायक मन्त्री मानवता मन्दिर ने फकीर लायब्रेरी चैरीटेबल ट्रस्ट का हिसाब दिखाया, उसने कहा कि आखों का हस्पताल खुलने के बाद मन्दिर के कुल व्यय के लिए कम से कम 135000/- रुपया की धन राशी प्रति वर्ष चाहिए। सुना, रात को अपने अन्तर सोचा की ऐ फकीर। तू ने यह क्या किया ? एक गढ़े से निकला और दूसरे कुऐ में गिरा। मगर अपना जीवन याद आता है। मुझको बचपन से ही किसी वस्तु की तलाश थी। वह तलाश मुझ को दाता दयाल महर्षि शिव ब्रत लाल जी महाराज के चरण कमलों में ले गई। उस पवित्र विभूति नें मेरी उस तलाश को मिटाने के लिए मुझ पतित और अज्ञानी जीव को छाती से लगाया। जीवन की प्रत्येक दिशा में मुझे उत्साह, सहारा और शक्ति दी। सत्य वस्तु, सच्चाई और शान्ति का रास्ता बताया। जब मैं पंथ में आया था और मैंने भी यह प्रण किया था कि अपना

अनुभव संसार को बता जाऊंगा और हजूर दाता दयाल जी महाराज ने फरमाया था कि चोला छोड़ने से पूर्व शिक्षा में परिवर्तन कर जाना। मुझे नहीं पता कि जो कुछ मैंने अनुभव किया वह ठीक है या ग़लत। आत्मा सत्य प्रिय है। जो कुछ मैंने गृहस्थि, शिष्य और गुरु होने की स्थिति में अनुभव किया वह मुझ को एक ऐसी अवस्था की ओर ले जा रहा है जहां न मैं, न तू, न गुरु, न चेला, न राम, न रहीम और न करीम। मगर अभी तक उस धुर धाम में मैं ठहर नहीं सकता। मालूम नहीं क्यों ? मैं यह कहने में विवश हूं कि या तो मेरे कर्म या इस संसार की रचना करने वाले की इच्छा।

मेरे इस कर्म भोग वश मैंने इन्सान बनो की आवाज़ उठाई। धर्मों और पंथों में जो रोचक और भयानक बातें धर्म और पंथ चलाने के लिए और दुनियां को पीछे लगाने के लिए कही गईं, उनको मैंने साफ कर दिया। समझ में आया की जब तक मनुष्य जीवन है वह आपस में प्रेम, सहायता और सेवा के अधीन है। अध्यात्मिक जीवन भी नाम, ध्यान प्रकाश और शब्द का अधीन है। इसलिए मैंने मन्दिर में यथा

शक्ति अनाथों, अन्धों और ग़रीब विद्यार्थियों की सहायता करने का काम किया। आर्थिक हीन लोगों के लिये होम्यौपैथिक, दांतों और आंखों का हस्पताल खोला। कई जीव भ्रम और शंका ग्रस्त होते हैं, उन को अपने भविष्य अथवा भाग्य की चिन्ता होती है। इनके लिये ज्योतिष का प्रबन्ध किया। जो सज्जन साधन या अभ्यास करना चाहते हैं उनके लिए भी प्रबन्ध किया। मगर जब डिप्टी सैक्रेटरी ने मन्दिर का हिसाब बताया तो ख्याल आया कि इतना व्यय करना कठिन मालूम होता है। यदि मैं परदा रखता, जिस प्रकार मेरा रूप लोगों के अन्तर प्रकट होकर उनकी सहायता करता है, मरते समय ले जाता है और दवाईयें बताता है, भारत वर्ष में हो नहीं विदेशों में भी, तो जितना भी धन चाहता, मान चाहता, ले सकता था। मगर मेरी आत्मा ने नहीं माना।

मानव मन्दिर पत्रिका या अन्य किताबें जो मानवता मन्दिर में छपती हैं मैंने उन का कोई मूल्य नहीं रखा। बिना मूल्य साहित्य बांटने का कारण मेरा ब्राह्मण के

घर का जन्म है। ब्राह्मण के लिए वेद बेचना पाप है। क्योंकि किताबों में जो कुछ लिखता हूं वह मेरा अनुभव है। इसलिए मैंने इस की कोई कीमत नहीं रखी। रात को सोचा कि माया के चक्कर में तो तू आ गया, अब बता तू क्या करेगा ? मेरा निर्णय यह है।

जो सज्जन मेरे साहित्य को पढ़ते हैं यदि उन की आत्मायें इस बात को मानती हैं कि मेरे इस काम द्वारा मानव जाति का भला हो सकता है तो वह मानवता मन्दिर की सहायता करें। मन्दिर में एक पैसा की हेरा-फेरी नहीं होता। ट्रस्ट है और विधिवत हिसाब है। जब तक इस सहायता से काम चलेगा चलायूंगा। अगर न चला तो हस्पताल बन्द कर दूंगा। दाता का हुकम है कि शिक्षा बदल जाना। मानव मन्दिर जारी रहेगा। यदि किसी कारण यह भी न चल सका तो मौज मालिक। दाता दयाल के ऋण से उतीर्ण हो जाऊंगा। इसलिये जो लोग मानव मन्दिर पढ़ते हैं उनसे यह मेरी हाथ जोड़ कर प्रार्थना है कि पत्रिका का प्रकाशन बढ़ रहा है। जिन की रुची इस के पढ़ने में न हो वह न मंगवायें।

से नर और पशु में जो अन्तर है उस का ज्ञान हो जाता है। मानवता के धर्म पर चलना कठिन काम है।

यूं तो सब खूबियां हैं तेरे जहां में।
मेरी निगाह तरसती है इन्सान के लिए।

किसी कवी ने खूब कहा है कि मेरी दृष्टि में इस संसार में कोई मानव नहीं है। इसलिए मैं मानव दर्शनों के लिए तरसता हूं। इसने ठीक कहा है।

मनुष्य और पशु में क्या अन्तर है। पशु खाता है, डरता है, जीवित रहने की इसमें इच्छा है। काम का भोगी है, अपनी संतान से प्रेम करता है। यदि गाय का बछड़ा मर जाये तो गाय को आंसू बहाते देखा गया है। कृतज्ञ है और समझ रखता है। एक कुत्ता तो कातल को पकड़ सकता है लेकिन मानव नहीं, राग पर मस्त हो जाता है (देखने में आया है और अनुभव भी किया गया है कि राग या बाजा बांसुरी बजाई जाये दोहने के समय तो गाय भैंस अधिक दूध देती है) नर और मादा का आपस में प्रेम आश्चर्य जनक है।

सुनिये सच्ची घटना। सायं बीत चुकी थी अंधेरा छा गया था। एक शिकारी घर से बाहर निकला, देखता क्या है कि एक जोड़ा पक्षियों का एक वृक्ष

पर बैठा है। इसको क्या सूझी, बन्दूक पास थी, अचानक चला दी। एक पक्षी मर गया। दूसरा उढ़ गया। शिकारी को मरा हुआ जानवर न मिल पाया लेकिन साथी पक्षी अपने साथी को ढूंडता रहा। वह इसकी लाश को तलाश न कर पाया। सारी रात वह सोया नहीं। वृक्षों के ऊपर चक्कर काटता रहा और बुरी तरह से चिल्लाता रहा शिकारी इसकी आबाज को, इसके चिल्लाने को सहन न कर सका। क्योंकि इस पक्षी का फूट २ कर रोना वड़ा हृदय विदारक था। जब प्रातः हुई, प्रकाश हुआ। इस पक्षी ने अपने साथी की लाश ढूड ली और पता लगा कि इसका साथी मर चुका है। फिर क्या था। वह उड़ा आसमान को। जिस ऊचाई तक उड़ सक़ता था उड़ा। आखिर इसने आसमान पर अपने पर बन्द कर लिए। एकदम धरती पर बड़ी ऊचाई से गिरा और अपनी जान दे दी। जुदाई सहन न कर सका।

क्या मानव में यह त्याग शक्ति है ? यदि है तो पक्षी भी मानव का इस में मुकावला कर सकते हैं। फिर कौन सी वस्तु मानव में है जो इसको रचना में अति श्रेष्ट बनाती है। आओ इस वस्तु को ढूंडे

जो केवल मानव में होनी चाहिए और किसी पशु पक्षी में नहीं है। वह है दया, दूसरों की सहायता करना। परोपकार करना और दूसरों के अधिकार को अपना अधिकार न समझना।

दया धर्म का मूल है पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया धर्म न छोड़ये जब लग घट में प्राण।

देखिये सन्त तुलसी दास जी रामायण में क्या फरमाते हैं कि मानव का एक मात्र धर्म दया है। जबतक शरीर में प्राण है मानव को दया करते रहना चाहिए।

हक्क पराया नानका क्या गाय क्या सूर।

गुरु नानक साहिब फरमाते हैं कि अपने अधिकार में सन्तोष रखना है और दूसरों के अधिकार पर छापा न मारना शुभ कर्म है। दुसरों के अधिकार को अपनाना मुसलमान और हिन्दु दोनों के लिए अशुभ कर्म है।

यह केवल दो मार्ग हैं। एक मार्ग दया का, नेकी का, परोपकार का, सहायता का और दूसरा मार्ग अपने अधिकार पर अपनी कमाई पर निर्भर रहना। इन दो मार्गों पर चलने वाला ही अपने

आदको मानव कहला सकता है और यह बड़ा कठिन काम है। केवल संत परमसंत हंस और परम हंस इन मार्गों पर चल सकते हैं।

फरिस्ता से बेहतर है इन्सान बनना।
मगर इसमें लगती है मेहनत ज्यादा।

विचार कीजिये, क्या कभी किसी पर दया की क्या कभी किसीं भूखे को रोटी दी ? प्यासे को पानी पिलाया ? नंगे को कपड़ा दिया ? अपने किसी गरीब सम्बन्धी की सहायता की ? किसी गरीब सम्वन्धी के लड़के की शिक्षा का प्रवन्ध किया ? आज कौन सा अच्छा काम किया ? कल क्या किया था ? पिछले महीने या साल में क्या कोई ऐसा काम किया है ? आयु व्यतीत हो रही है। मनुष्य जन्म मुफ्त में गंवाया जा रहा है। जिसने कुछ नहीं किया क्या वह मानव कहलाने का अधिकार रखता है ?

आयकर निकरी कर छुपाना, कम तोलना और तस्करी अदि भी मनुष्ता नहीं है।

सब को राधास्वामी।

प्रस्थान				पहुंच			
जगह	तारीख	समय	गाड़ी नं०	जगह	तारीख	समय	गाड़ी नं
होशियारपुर	24-9-76	7-50	3 JH	जलन्धर शहर	24-9-76	9-10	3 JH
			विश्राम मकान	नं० 340 B	रेलवे	कालोनी	जलन्धर
जलन्धर	,,	20-05	350 DN Dera Dun Pass	सहारनपुर	25-9-76	5-45	350 DN
फिर सड़क द्वारा सरसों हेड़ी पधारेंगे, और 25-9-76 से लेकर 27-9-76 तक वहां ठहरेंगे।							
सहारनपुर	28-9-76	700	57 DN	मुरादाबाद	28-9-76	11-45	57 DN
फिर सड़क द्वारा बिलारी पधारेंगे और 28/9 और 29/9 को वहां ठहरेंगे।							
मुरादाबाद	30-9-76	14–50	55 UP	दिल्ली	30-9-76	20-35	554 up
1-10-76 से लेकर 3-10-76 तक दिल्ली में दुसहरे के सत्संग							
दिल्ली	4-10-76	12-50	215 Chetak Exp	भीलवाड़ा	5-10-76	3-15	215 Chetak Exp
5-10-76 से लेकर 7-10 76 तक भीलवाड़ा में विश्राम व सत्संग							
भीलवाड़ा	7-10-76	23-40	16 DN Chetak Exp	अलवर	8-10-76	10-10	16 DN
8-10-76 से लेकर 9-10-76 तक अलवर में विश्राम							
अलवर	10-10-76	10-10	16 DN Chetak Exb	दिल्ली सराय रोहल	10-10-76	13-50	16-DN
10-10 [illegible] से लेकर 11-10-76 तक दिल्ली में विश्राम							
दिल्ली	[illegible]	[illegible]	[illegible]	होशियारपुर	12-10-76	6-35	3 JH

आवश्यक सूचना

श्री देवी चरन मितल व्यवस्थापक व सम्पादक "मनुष्य बनो" पत्रिका का दिः २९ ६ ७६ को देहान्त हो गया है। पत्रिका की दुबारा प्रकाशक तथा सम्पादक की अनुमति भारत सरकार से लेनी पड़ी

इस कारण मनुष्य बनो पत्रिका विलम्ब से प्रकाशित होगी। पाठक गण क्षमा करेंगे।

भवदीय

प्रभुदयाल मितल

Regd. No. 26265/74

MANAV MANDIR

P—Hsp—7.

1283

ADDRESS

To

Sri A. Hanmanth Rao.

H. No. 10-3-194/8

Humayun Nagar

500028 Hyderabad. 28 A.P.

From :

MANAVTA MANDIR

SUTEHRI ROAD,

HOSHIARPUR.